राजीव
मोटू पतलू और
प्राइवेट खुफिया

D—1018

"मैंने कहा ··· मेम साब जी ··· आप हमें कहां भगाए लिए जा रही हैं ? कम-से-कम इतना तो बताइए—आप हमें कहां लिए जा रही हैं ?"

"तुम लोग चुपचाप बैठे रहते हो या नहीं ?" उसके तेवर एकदम उखड़ गए।

सभी सन्नाटे में आ गए।

"मेम साब ··· आप कार रोकती हैं या नहीं ··· मत भूलिए कि हम पांच हैं और आप एक !" घसीटा राम ने फिल्मी हीरो के अंदाज में धमकी दी।

उसने हंसते हुए सभी के आगे हाथ में ले रखा रिवाल्वर सीधा करते हुए कहा—"चीं ··· चपाट की तो पलक झप-कते हुए लोगों की जासूसी को धूल में मिला दूंगी। ये रिवा-ल्वर 'बेबी' स्कॉट है। ये हिन्दुस्तानी रिवाल्वरों की तरह भौंकता नहीं—सिर्फ मारता है। समझे ? कहीं समझने-कहने का मतलब—ये है कि यह साइलेंसर युक्त रिवाल्वर है। ट्रैगर दबाते ही ये शोले उगलता है और सामने वाले के शरीर में बिना आवाज किए ठंडा हो जाता है—और सामने वाले को भी ठंडा कर देता है।"

पांचों के पांचों चकित रह गए।

—इसी पुस्तक में से

डायमण्ड बाल पाकेट बुक्स में :
राजीव के अन्य उपन्यास :

चाचा चौधरी और सीक्रेट आपरेशन
लम्बू मोटू और सरहद का धुआं
मामा भान्जा और जादुई घोड़ा
ताऊजी और सुनहरी मकड़ी
टारजन और जंगल सम्राट
चाचा भतीजा और मायाजाल
मोटू पतलू और भाग्यवान
अण्डेराम डण्डेराम और सोने का अण्डा
चाचा चौधरी और डाक बंगले का शैतान
मामा भान्जा और तस्करी का अड्डा
चाचा भतीजा और समुद्री जादूगर
महाबली शाका और मौत की पहाड़ी
अण्डेराम डण्डेराम और मैडम डायना
टारजन और प्रेतनी का नाटक
मोटू पतलू और प्राइवेट खुफिया
चिम्पू और उड़न तश्तरी
चाचा चौधरी और सुनहरा तीर
चाचा भतीजा और नागलोक का तिलस्म
मामा भांजा और छे मित्र
महाबली शाका और रहस्यमयी युवती
लम्बू मोटू और अजीब मुसीबत
चिम्पू और करामाती धन
टारजन और रहस्यमयी घेरा
ताऊजी जादूगर का षड्यंत्र
चाचा चौधरी और पशुमानव
मामा भांजा और जादूगर राक्षस
लम्बू मोटू और करोड़ों का धमाका
फौलादीसिंह और विचित्र आत्मा
महाबली शाका और पहाड़ों की रानी
अण्डेराम डण्डेराम और तकदीर की हेराफेरी
टारजन और भयानक तूफान
अंकुर और शैतान का जाल

राजीव
मोटू पतलू और
प्राईवेट खुफिया

मोटू-पतलू और प्राइवेट खुफिया

मोटू-पतलू एण्ड कम्पनी प्रा० लिमिटेड का बोर्ड शहर की एक आलीशान इमारत, गुप्त भवन पर रातों-रात लटका दिया गया।

सुबह जो भी निकला हैरानी से देखे बिना रह न सका। बोर्ड के एक ओर लिखा था—खुफिया एजेन्सी दूसरी तरफ लिखा था—आपकी जटिल से जटिल समस्याओं से छुटकारा पाने का एक मात्र ऑफिस।

इमारत के एक मात्र दरवाजे पर मरियल-सा कुत्ता बँधा था।

जो भी आता इमारत के गेट पर खड़ा हो जाता। देखते ही देखते भीड़ लग गई। भीड़ देखकर आते-जाते कुछ और लोग भी जमा हो गए।

कुछ ही देर में—सड़क का यातायात रुक गया। जो भी रुकता—एक दूसरे से पूछता, "भाई, क्या चक्कर है? कौन-सी मुसीबत आई है?"

"खुफिया विभाग खुला है। हर तरह की समस्या का

निदान यहां हो सकता है। लेकिन वहां दिखाई कोई भी नहीं दे रहा है। इमारत के एक मात्र दरवाजे पर मरियल-सा कुत्ता बँधा है। जो भी गेट की तरफ बढ़ता है—वह उस पर भौंकता है।"

जितने मुंह उतनी बातें !

कुछ लोगों में बाकायदे जंग छिड़ गई। किसी एक ने कहा, "अजीब-अजीब तमाशगीर पैदा हो गए हैं इस शहर में। अब यह खुफिया विभाग खुला है। सोचने की बात है—क्या खुफिया विभाग का भी कभी कोई समझदार आदमी बोर्ड लगवाता है ? इसी से पता चलता है—ये संस्था या···यह आफिस लोगों को मूर्ख बनाने का कारखाना खुला है।"

"अजीब···बिना सिर के पास आदमी नज़र आते हैं आप···।" किसी ने झुंझलाकर जवाब दिया। फिर घूर कर देखते हुए आगे बोला, "अरे जनाब—यदि बोर्ड नहीं लगाया जाएगा तो फिर लोगों को कैसे पता चलेगा कि यहां किसी चीज का आफिस खुला है ! अब यह बात दूसरी है कि जब मामला इस संस्था के हाथ में पहुंचेगा तो वह उसे टॉप सीक्रेट रखेगी।"

"बकते हैं आप···!"

"अजी बक तो आप रहे हैं—बिना भेजे की बात करके लोगों का भेजा आउट कर रहे हैं।"

"तब जाओ—यहां क्यों खड़े हो। घुस जाओ भीतर और अपनी जेब कटा कर वापस आओ।"

"मैं क्यों जाऊं—जाओ तुम···मैं तुम्हारी तरह मूर्ख

नहीं हूं मियां—जो राह चलते बैल से कहूं—आ बैल मुझे मार!"

"तुम मुझे मूर्ख कह रहे हो—तुम्हारी यह मजाल···? मैं तुम्हारी खोपड़ी तोड़ दूंगा।"

"मैं तुम्हारा थोबड़ा बिगाड़ दूंगा।" इसके साथ ही उसने उसके मुंह पर अपना पंजा मार दिया।

पंजा मारते ही—वह जोरों से चिंघाड़ा। चिंघाड़कर जैसे ही गिरा, करीब खड़े लोगों में भगदड़ मच गई। जोरदार धक्का-मुक्की शुरू हो गई। जिसकी समझ में जो आया करने लगा। हाथापाई शुरू हो गई। कुछ लोग आते-जाते वाहनों से टकरा गए।

देखते ही देखते अच्छा खासा तमाशा शुरू हो गया।

पुलिस को खबर लगी। फ्लॉईंग स्कॉट की जीपें घटना स्थल पर पहुंचीं। पत्रकारों की गाड़ियां भी आ पहुंची। पांच सात लोग पकड़ में आए। उन बेचारों की हालत खराब हो गई थी। किसी का हाथ टूटा था—किसी का पैर, किसी का सिर फटा था—तो किसी की आंख फूट गई थी।

पत्रकारों ने फसाद (दंगा) का कारण जानने की कोशिश की। खुफिया विभाग के ऑफिस की तस्वीर भी उतार ली गई।

मोटू-पतलू छुपकर बाहर का नजारा देख रहे थे। उन्होंने सारी उठा पटक अपनी आंखों से देखी थी। उन्हें किसी फिल्म के स्टेट दृश्यों का मजा आया था।

"काश! ऐसे में चेलाराम और घसीटाराम होते तो

वह देखते कि हमारी अक्ल ने कितना बड़ा गुल खिलाया है।" मोटू बोला।

"होते कहां से—उनके भाग्य में ही नहीं था कि वह यह सब देखते।" पतलू ने भी स्वर में स्वर मिलाया।

"मुझे सबसे अधिक दुख डाक्टर झटका का हो रहा है—बेचारा जाने कहां सिर के बल भटक रहा है। जब कि दोस्त पतलू—यह आइडिया उसी का था।"

अभी ये बातें कर ही रहे थे कि दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी। दोनों ही उछल पड़े मोटू ने पतलू को धक्का देते हुए कहा—

"वाह ! आ गया कोई मुर्गा…।"

"अबे मुर्गा क्यों—मुर्गी भी आ सकती है। बेटे इस पेशे में—मुर्गों से ज्यादा मुर्गियां फायदेमन्द होती हैं।" पतलू बोला।

"अबे पहले दरवाजा तो खोल—और सुन—मैं भीतर जाता हूं—जो भी हो उसे लाकर खामोशी से बिठालना—कहना चीफ साहब अन्दर हैं—किसी मुर्दे से पूछताछ कर रहे हैं।"

"मुर्दे से !" पतलू ने अपने दिमाग पर जोर डाला।

"अबे जाएगा भी…।"

उधर दरवाजे पर जैसे कोई हथौड़े बजा रहा था।

पतलू एक दम भागा। दरवाजे पर पहुंचा। दरवाजा जैसे ही उसने खोला, चौंक गया।

"अ… अ… आप… क्या बात है इन्स्पेक्टर साहब ?"

"इस आफिस का मालिक कौन है ?"

"मैं हूं···न···हीं···नहीं···मोटू है।"

"मोटू···! ये मोटू कौन है?"

"इस आफिस का मालिक है।"

"बुलाओ उसे मैं, इन्स्पेक्टर चाना हूं।"

"अभी बुलाता हूं···।" पतलू दुम दबाकर भीतर के कमरे की ओर भागा। दरवाजा आहिस्ता से खोलते हुए वह जैसे ही भीतर दाखिल हुआ पतलू ने पूछा, "क्यों प्यारे···मुर्गा है या मुर्गी···?"

"मुर्गा···लेकिन मोटू प्यारे···मुर्गा खाकी वर्दी में है।"

"क्या मतलब?"

"अबे इन्स्पेक्टर चाना आया है।"

"इ···इ···इन्स्पेक्टर चाना···।" मोटा का चेहरा जलते बल्व सा लुप से बुझ गया। आंखें बाहर की ओर लटक आईं। लेकिन दूसरे ही क्षण उसने अपनी खोपड़ी पर पांच-सात हथेलियां मारीं और जो दिमाग लुढ़ककर पीछे की ओर चला गया था। उसे झटके के साथ आगे लाकर बोला, "दोस्त पतलू, मुर्गा कैसा भी हो और किसी भी रंग का हो—हलाल करने वालों पर उसका कोई असर नहीं पड़ता।"

"तब चलो···।"

पतलू बाहर आ गया। उसके पीछे मोटू निकला। उसने अन्दर से ढेर सारी फाइलें निकालकर हाथ में ले ली थीं। बाहर निकलते ही उसने पतलू पर ठस्सा जमाया, "मिस्टर पतलू—वहां खड़े-खड़े तुम क्या कर

रहे हो—इन फाइलों को कायदे में लगाओ और भीतर जाकर चांदीमल और अशर्फीलाल को फोन् करो—कहना मिस्टर, हमें तुम बेवकूफ नहीं बना सकते। भविष्य में स्मग्लिंग का यह हथकंडा यदि तुम लोगों ने नहीं छोड़ा तो याद रखो—सीधे हवालात दिखला देंगे।"

पतलू तुरन्त ही वापस हुआ। इन्स्पेक्टर चाना ने भेद भरी नज़रों से देखते हुए कहा, "मिस्टर मोटू आप हैं?"

"सारी दुनिया जानती है इन्स्पेक्टर चाना, शायद आप ताज़ा-ताज़ा इस शहर में आए हैं।"

"यह आफिस आपने खोला है?"

"आपको एतराज है?"

"जो पूछा जा रहा है—उसका सही-सही और सीधा-सीधा जवाब दीजिए मिस्टर मोटू···।"

"इन्स्पेक्टर आप मेरे आफिस में आए हैं। सवाल पूछने का हक मेरा है। फरमाइए आपने यहां आने का कष्ट क्यों किया?"

"आपके आफिस की वजह से बाहर ट्रैफिक जाम हो गया। लोगों में दंगा हो गया। पांच-सात आदमी घायल हो गए।"

"इन्स्पेक्टर···कमाल है आप भी—क्या आप बता सकते हैं—किसी को मेरी कम्पनी के बोर्ड ने पकड़ कर पीटा है—या रास्ता रोका है? मैंने या मेरी कम्पनी ने किसी का रास्ता रोका हो तो कहिए।"

"नहीं ऐसी बात तो नहीं है।"

"तब यदि कुछ पागलों का हुजूम एक दूसरे की खोपड़ी पर चांदमारी का खेल खेलने लगे —तो क्या इसके लिए मैं जिम्मेदार हूं ?"

"यह कम्पनी आपने खोली है ?"

"इन्स्पेक्टर साहब, यह खुफिया विभाग का प्राइवेट आफिस है। इस टाइप की किसी भी प्रकार की जानकारी आपको नहीं मिल सकती। यदि आपको एतराज है तो आप ऊंचे स्केल पर कार्रवाई कीजिए। फरमाइए इसके सिवाए भी आपको कोई काम है ?"

इन्स्पेक्टर चाना का दिमाग बौखला गया। बौखलाए अन्दाज़ में ही इन्स्पेक्टर चाना ने कहा, "मिस्टर मोटू···बहुत ऊंचे स्वर में आलाप रहे हो —जानते नहीं, मेरा नाम इन्स्पेक्टर चाना है।"

"चाना साहब, नए-नए हैं— कुछ दिन इस शहर का दाना-पानी खाइए—फिर आपको पता चलेगा—हम क्या चीज हैं ? मोटू-पतलू, मास्टर घसीटाराम, डाक्टर झटका एण्ड चेलाराम — हम पांचों एजेण्ट राजधानी दिल्ली के डायमण्ड सीक्रेट हाऊस के सक्रिय सदस्य अर्थात् एजेण्ट हैं। हमारे नाम की तूती हिन्दुस्तान में ही नहीं विदेशों तक में बोलती है। मत भूलिए सैंकड़ों बार हम गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया की भी मदद कर चुके हैं।"

"ठीक है, इस समय तो मैं जाता हूं—लेकिन जल्दी ही वापस आऊंगा।"

"किसी मामले को लेकर आइएगा। अच्छा गुड

आई···।"

इन्स्पेक्टर चाना तुरन्त ही बाहर निकल गया।

मोटू-पतलू उछलकर एक दूसरे से लिपट गए। पतलू ने गर्व के साथ कहा, "वाह दोस्त मोटू···इन्स्पेक्टर चाना की खोपड़ी पर तुमने खूब चम्पी की। अब भविष्य में कभी वह इस तरफ को रुख भी नहीं करेगा।"

"यस···वरना उसकी ऐसी हजामत, करूंगा कि वह भी क्या याद रखेगा।"

"बेशक, अभी उसे पता नहीं है—मिस्टर मोटू का, चम्पी और हजामत करने में जवाब नहीं है। खानदानी हजामत करने वालों को भी···।"

"पतलू···तो क्या तुमने मुझे···।" वह बड़ी जोरों से चिघाड़ा।

"आई···।" पतलू को होश आया कि उसने अपने यार मोटू की शान में कितनी मूर्खतापूर्ण बात कह डाली है। उसने तुरन्त ही क्षमायाचना का हथियार सम्हाला, "क्षमा करना दोस्त, मेरा अभिप्राय यह कदापि नहीं था कि मैं तुम्हें हज्जाम अली साबित करूं—लेकिन चूंकि तुम कह रहे थे—इसीलिए मैंने भी हां-में-हां मिला दी।"

"भविष्य के लिए याद रखो पतलू—अब कभी ऐसी बेहूदा बात की तो कान पकड़ कर इस खुफिया विभाग से नौ-दो-ग्यारह कर दूंगा। क्या समझे—? क्या कर दूंगा—?"

"मुझे आप जनाब कान पकड़ कर नौ-दो-ग्यारह

कर देंगे…।"

दिन बीत गया।

मोटू-पतलू मुर्गे और मुर्गी की प्रतीक्षा में बैठे सूखते रहे। कोई नहीं आया। कुत्ता जो दरवाज़े पर बंधा था—वह भौंक-भौंक कर कान खाता रहा। उन्हें याद ही नहीं आया कि दुबला-पतला मरियल कुत्ता जिसकी दुम आधे से ज्यादा गायब है—भूख के मारे दम तोड़ने जा रहा है।

ऐसे ही समय पागलों की तरह भागते हुए गेट से भीतर घुसे मास्टर घसीटाराम, चेलाराम और डाक्टर झटका। तीनों के हाथों में अखबार था। लेकिन डाक्टर झटका के साथ गेट पर पहुंचते ही बुरी बीती। जैसे ही वह कुत्ते के करीब से निकला—कुत्ते ने उसकी टांग को अपना निशाना बनाया। डाक्टर झटका चिंघाड़ा और गिर पड़ा। बिना मतलब की कांय-कांय शुरू हो गई। राहगीर जो अजूबा नज़रों से देखते सामने से आ जा रहे थे। डाक्टर झटका की कांय-कांय से रुक गए।

मास्टर घसीटाराम ने किसी फौजी की तरह डाक्टर झटका को कुत्ते के नजदीक से दूर खींचा फिर साहस बंधाते हुए बोला—"डाक्टर झटकाराम हिम्मत से काम लो—एक कुत्ते के आगे गिरा हुआ देखकर लोग हमारे बारे में क्या सोचेंगे? मत भूलो—अब हम भारतीय जासूस हैं—जांबाज़ जासूस। सरकारी जासूसी की अपेक्षा प्राइवेट जासूसों का महत्व अधिक होता है।"

"हाय…हाय…इस कमबख्त मरियल कुत्ते ने मेरी

टांग खा ली। अब मेरा क्या होगा? हाय···हाय···हाय···।"

"डाक्टर झटका—।" चेलाराम बोला, "···यार धीरे बोलो, गेट के पास खड़ी जनता तुम्हारी हाय-हाय सुन रही है—हमारी जासूसी संस्था की इज्जत खटाई में पड़ जाएगी।"

"यहां मेरी टांग से खून बह रहा है और तू—।"

किसी तरह घसीट-घसाट कर मास्टर घसीटाराम, डाक्टर झटका को भीतर ले जा सका। चेलाराम पीछे-पीछे पहुंचा।

"प्यारे मोटू—कमाल हो गया—।" चेलाराम ने आगे बढ़कर मोटू-पतलू के आगे अखबार फैलाया।

"दोस्त···वाकई शहर में हम चर्चा का विषय बन गए हैं। चारों तरफ हमारी ही चर्चा हो रही है। इन अखबार वालों ने जाने किस जनम की हमारी शराफत और भलमनसाहत का बदला आज चुकाया है।" मास्टर घसीटाराम ने चहकते हुए कहा।

"हाय···हाय···मेरी टांग···।" डाक्टर झटका चिचयाने लगा।

"ओ···हो···यार डाक्टर झटकाराम···तुम्हारी इस कमबख्त टांग ने हमारा खून पी लिया।"

"अबे गधो···कुत्ते के बच्चे ने अपना पूरा जबड़ा मेरी टांग में घुसेड़ दिया है—लहूलुहान कर दिया है कमबख्त ने और तुम लोग···।"

"झटकाराम···तुम ही कुत्ते को लाए थे—तुम कहते

थे उससे मेरी यारी है—और उसी ने तुम्हें काट खाया।" पतलू बोला।

"यारी तो तुम लोगों से भी है—अब तुम लोग मुझे धोखे से काटने लगो तो इसमें मैं क्या ··· करूं ···।"

"खैर! हिम्मत से काम लो—हम तुम्हें तुम्हारी डिस्पैन्सरी ले चलते हैं—वहां तुम अपना इलाज खुद करना।" मोटू ने नेक सलाह दी।

शाम हो चुकी थी। आफिस से पांचों निकले। कुत्ते पर नजर गई तब याद आया कि इसे किसी ने खाना तो दूर पानी भी नहीं दिया है।

सामने से तभी डबल रोटी वाला निकला तो मास्टर घसीटाराम ने उसे रोका। एक पूरी डबल रोटी ली और खोलकर कुत्ते के आगे डाल दी। रोटी वाले ने पैसे मांगे तो घसीटाराम को होश आया, 'पैसे नहीं हैं।' उसने करीब जाकर कहा, "दोस्त, तुम चेहरे से बहुत शरीफ लगते हो।"

"अजी साबजी, पैसे दीजिए—मैं आगे चलूं।"

"रोका किसने है। लेकिन यह तो बताओ क्या तुम रोज ही इतने समय यहां से निकला करते हो?"

"जी हां ···।"

"तब हम तुम्हारे मंथली ग्राहक बन गए समझो। हम रोज शाम को एक डबल रोटी लिया करेंगे। ठीक है?"

"ठीक है साब ···।"

"तब जाओ—रोज एक डबल रोटी इस कुत्ते के आगे

डाल जाया करो।"

"जी ··· डाल दिया करूंगा। अभी तो पैसे दीजिए।"

"मंथली ग्राहकों की इज्जत होती है—क्या समझे? बिल महीने पर देना। पांच रुपये इनाम के अलग से मिलेंगे। हां, एक बात याद रखना—यदि रोटी में चोरी करोगे तो मुसीबत में आजाओगे। यह कुत्ता आवारा या बद-चलन नहीं है। यह जासूसी कुत्ता है—बड़ा ही खतरनाक है—यह जानते हो किसके साथ रहा है?"

"जी ··· किसके?"

"दुनिया के माने हुए जासूस ००७ जेम्स बॉड के साथ। कहते हैं इसकी आंखों में सुअर का बाल है—जिसका खाता है उसी पर भौंकता है। अभी-अभी इसने डाक्टर झटका को काट खाया है—पूरा जबड़ा घुसेड़ दिया है। देखो ··· मैं इसकी जंजीर खोलता हूं—तुम देखोगे ये बिजली की रफ्तार से भाग सकता है।" मास्टर घसीटाराम कुत्ते की तरफ बढ़ा और डबल रोटी वाला सिर पर पैर रखकर भागा।

"वाह मास्टर घसीटाराम, लगता है जासूसी के काफी हथकंडे तुम्हें आ गए हैं।"

"अरे भाई सारी जासूसी यहीं कर लोगे, मेरी टांग फटी जा रही है।"

सभी गेट से बाहर निकले।

"मैं खड़ा भी नहीं रह सकता—" डाक्टर झटका चिचयाने लगा, "लगता है—मेरे शरीर में कुत्ते का जहर फैलता जा रहा है। कहीं ऐसा न हो—मैं भौंकने लगूं—

और कुत्ते की तरह उछल-उछलकर काटने लगूं। याद रखो—मुझे कुछ हो गया तो मैं तुम सबको काटूंगा। कुत्ते के काटे का इलाज हो सकता है—मेरे काटे का इलाज नहीं हो सकता। तुम सब भौंकते फिरोगे—शहर के लोगों को काटोगे—और तुम सब की गिनती…।"

"झटका—प्यारे झटका, हम तुम्हारे लिए अभी टैक्सी का बन्दोबस्त करते हैं।" पतलू बोला।

"लेकिन हमारे पास कहां हैं?" मोटू बोला, "मैं सोचता था, पहले ही दिन कोई न कोई मुर्गा या मुर्गी फंसेगी लेकिन यहां तो चूहा भी नहीं फंसा!"

"कोई बात नहीं—मेरा नाम चेलाराम है—बहर-हाल जासूस हूं। खोपड़ी मेरी अजायबघर है खाली पतीली नहीं।" अभी चेलाराम आगे बढ़ पाता कि एक लकदक कार उनके ठीक सामने करीब ही आकर खड़ी हो गई।

सभी हैरानी से देखने लगे। ड्राइवर की जगह एक सुन्दर नवयुवती बैठी थी। खूब गोरी। उसने आंखों पर गो-गो लैन्सों वाला चश्मा लगा रखा था। मुस्कराते हुए उसने अंगुली के इशारे से सभी को अपने पास बुलाया।

सभी चकित रह गए। सभी के मन में—एक ही प्रश्न उठा, "यह सुन्दर-सुन्दर सी मुसीबत क्या है?"

साहस करके मोटू करीब पहुंचा। उसने मुस्कराते हुए कहा, "मोटू-पतलू एण्ड कम्पनी तुम्हारी है?"

"जी…जी…जी…हम सभी की है।"

"तुम सब जासूस हो?"

"प्राइवेट जासूस…।" किसी तरह मोटू बोला।

"तब सभी बैठो—किसी ने तुम्हारे जैसे जांबाज़ जासूसों की खातिर गाड़ी भेजी हैं।"

"किस…किस…किसने भेजी है ?"

"किसी ने भी—बस यूं समझो एक मामला है—तुम लोग वह केस अपने हाथ में ले लो और मौज करो।"

"वह कैसे ?"

"क्या सारी बातें अच्छे जासूस इस तरह सड़क पर खड़े होकर किया करते हैं ? इस समय तो सिर्फ इतना ही कहूंगी—तुम सभी की पांचों अंगुलियां घी में होंगी और सिर कढ़ाही में तैर रहा होगा।"

"क्षमा कीजियेगा—हम फाइनल करके कल बतायेंगे। इस समय हमारा दिमाग खराब है।"

"क्यों ?"

"हमारे दोस्त, डाक्टर झटका को एक मरियल कुत्ते ने काट खाया है। उसका इलाज करवाना है।"

"जहां आप लोग जा रहे हैं—मेरा मतलब है—आप लोग मेरे साथ चलेंगे—वहां हर समस्या का इलाज है ?"

"तब चलो।"

इसके साथ ही सभी कार में बैठ गए। बैठते ही उस नवयुवती ने पूरी रफ्तार पर कार छोड़ दी। कुछ ही क्षणों में—कार फूलों की डाल-सी हिचकोले खाती भागने लगी। वह शहर की सड़कों को तेजी से निगलने लगी।

नवयुवती कार भगा रही थी। मोटू-पतलू, डाक्टर

[illegible], [illegible]राम, और मास्टर घसीटाराम मन ही मन में भय से कांप रहे थे, 'कहीं हम किसी भयानक मुसीबत का शिकार होने तो नहीं जा रहे हैं?' सैकड़ों सवाल उनके मन में मंडरा रहे थे, 'यह नवयुवती कौन है?'

'हमें कहां ले जा रही है?'

मोटू भी परेशान था, 'आखिर इसे किसने भेजा है?'

लेकिन ये सारे सवाल अंधकार में डूबे हुए थे। कार भाग रही थी। कार ने शहर पीछे छोड़ दिया। और अब कार वीराने की ओर भाग रही थी।

"मैंने कहा—मेम साब जी—आप हमें कहां भगाए लिए जा रही हैं? कम से कम इतना तो बताइए—आप हमें कहां लिए जा रही हैं?"

"तुम लोग चुपचाप बैठे रहते हो या नहीं?" उसके तेवर एक दम उखड़ गए।

सभी सन्नाटे में आ गए!

"मेम साब···आप कार रोकती हैं या नहीं—मत भूलिए कि हम पांच हैं और आप एक!" घसीटाराम ने फिल्मी हीरो के अंदाज़ में धमकी दी।

उसने हँसते हुए सभी के आगे हाथ में ले रखा रिवाल्वर सीधा करते हुए कहा, "चीं···चपाट की तो पलक झपकते तुम लोगों की जासूसी को धूल में मिला दूंगी। ये रिवाल्वर बेबी स्कॉट है। ये हिन्दुस्तानी रिवाल्वरों की तरह भौंकता नहीं—सिर्फ काटता है। समझे? नहीं समझे—कहने का मतलब—ये है कि यह साइलैन्सर

युक्त रिवाल्वर है। ट्रिगर दबाते ही ये शोले उगलता है और सामने वाले के शरीर में बिना आवाज किए ठण्डा हो जाता है—और सामने वाले को भी ठण्डा कर देता है।"

पांचों के पांचों चकित रह गए।

डाक्टर झटका को होश ही न रहा कि उसे कुत्ते ने काटा भी है।

मास्टर घसीटाराम का चश्मा—रह-रह कर नाक पर उछलने लगा।

चेलाराम की बोछी रह-रह कर अंगड़ाईयां लेने लगी।

मोटू की आंखें बाहर की ओर निकल आईं और मूछें थरथर कांपने लगीं।

पतलू की हालत और भी पतली हो गई।

सारे के सारे मोटू को कोसने लगे, 'इस कमबख्त ने कहा फंसवा दिया ? अब क्या होगा ?'

सभी के चेहरे डब्बे नज़र आने लगे। कार अब भी उसी अवाध गति से उड़ी जा रही थी। सांय···सांय··· सांय···! सामने नज़र आती सड़क तेजी से पीछे छूटती जा रही थी।

सांझ कब की डूब गई लग रही थी। अन्धेरा घिर आया। तभी कार ने तेजी से एक मोड़ काटा और फिर कार कच्चे रास्ते पर भागने लगी।

□ □

कुछ ही देर बाद !

एक खण्डहरनुमां पुरानी हवेली के आगे झाड़ियों की ओट में कार पहुंचकर खड़ी हो गई। बड़े-बड़े चमगादड़ झपाटे मारते अब भी उड़ रहे थे।

"उतरो···।" नवयुवती चबाती-सी आवाज में बोली।

सभी उतर गए। वहां का भयानक माहौल देखकर सभी के होश उड़ने लगे। नवयुवती ने घूरते हुए आगे कहा, "चलो आगे—।" वह सभी को हांकते हुए खण्डहर के भीतर ले गई।

जैसे ही पांचों जासूस, खंडहरनुमां हवेली के घने अंधकार में पहुंचे—उन्हें लगा—वह सीधे मौत के मुंह में समाते जा रहे हैं।

भागने का कोई चांस नहीं था। वह नवयुवती बाकायदे उनके पीछे अपने रिवाल्वर के साथ चल रही थी।

अनेक जगह मास्टर घसीटाराम गिरते-गिरते बचा। मोटू से पतलू टकराया। डाक्टर झटका की हालत और भी खराब थी। उसे लग रहा था—उसे टैम्प्रेचर हो गया है।

अनेक दालानें और छोटे-छोटे चौक पार करने के बाद—सामने नजर आते छोटे-से दरवाजे की ओर इशारा करते हुए नवयुवती ने हांक लगाई, "घुसो भीतर···।"

पांचों का साहस बोल गया—किसी में हिम्मत नहीं

थी वहां घुसे। पीछे खड़ी नवयुवती ने मोटू को धक्का दे दिया।

मोटू को इसकी तो कल्पना भी नहीं थी कि ऐसा हो जाएगा। वह सहज खड़ा था—दरवाजे के भीतर बेलाग गिरा। उसके मुंह से चीख फटी। उधर तभी नवयुवती ने के० बी० टार्च जला दी। रोशनी का एक गोला फर्श पर छिटक गया।

"चलो...।" नवयुवती फिर चीखी।

एक के पीछे एक फिर घुसे।

छोटे-से कमरे में एक ओर को सीढ़ियां थीं। सभी सीढ़ियां उतरे। वास्तव में वहां तहखाना था।

सभी तहखाने में अंधों की तरह उतरकर चलने लगे। ये चलते रहे। एक निश्चित जगह पर उसे रोकते हुए उसने कहा,—"बस, अब तुम लोग सीधे यहीं खड़े रहो।" नवयुवती एक ओर को चल दी।

पांचों—नवयुवती के आगे जाते ही आपस में फुसफुसाने लगे। मोटू बोला, "इस कमबख्त डाक्टर झटका ने मरवा दिया...।"

"मोटू, असली करतूत तेरी है—किसने कहा था—इस औरत की कार में बैठने को।"

"नहीं तो क्या...।" चेलाराम बोला, "जान न पहचान बीबी जी सलाम...।"

"तब क्यों बैठे—क्या मैंने तुम लोगों को गोद में उठा-उठाकर बिठाया था?"

घसीटाराम घिघियानी आवाज में बोला, "अमां

यारो ··· झगड़ने से क्या होगा? मौका है भाग निकलो।"

"नहीं मास्टर घसीटाराम ··· यह औरत मुझे काफी खतरनाक लगती है—भागते ही हमें गोली मार देगी।"

इसके साथ ही—एक साथ बीसों लोग हँसने लगे। पांचों चौंके। और आंखें फाड़-फाड़कर अपने चारों तरफ देखने लगे। अभी इनकी आंखें यहां के अन्धकार की अभ्यस्त नहीं हुई थीं।

और तभी तेज रोशनी इन पर पड़ी तो जैसे ये अन्धे हो गए। आंखें ढांपकर ये खड़े रह गए।

नवयुवती एक आदमी के पास खड़ी इन्हें घूर रही थी। आदमी जिसने अपना चेहरा स्कॉर्फ से छुपा रखा था। बोला, "वाकई, ये तो कमाल के हैं।"

"अब तो आपको विश्वास आ गया होगा बॉस ··· ?"

"यस मिस बबाला—पूरा यकीन आ गया है।"

पांचों सुन रहे थे—लेकिन देखने में असमर्थ थे। चारों तरफ करीब बीस लोग खड़े थे। सभी ने शरीफों की तरह सूट बूट टाई पहन रखी थीं लेकिन सभी के चेहरों पर स्कॉर्फ बंधे थे।

"दोस्तो, क्या ख्याल है?" बॉस ने सभी से पूछा।

"ठीक है बॉस ···।" दो-चार ने स्वीकृति दी।

"मिस बबाला, ले जाओ इन्हें। इन मासूमों की खातिरदारी करो। इन्हें हमारी तरफ से पूरा-पूरा सहयोग मिलना चाहिए।"

"ओ० के० बॉस ···।" मिस बबाला ने कहा।

उधर इन पांच पांडवों पर पड़ती तेज रोशनी गुल

कर दी गई। एक बार फिर वहां घना अन्धकार छा गया।

"चलो ···।" नवयुवती ने उन्हें एक बार फिर हांका।

कुछ ही क्षणों बाद वह एक कमरे में पहुंचे। वहां धूमिल लेकिन सुखद रोशनी थी। कमरा आधुनिकतम साजो-सामान से सुसज्जित था। सभी की आखें फैली रह गईं।

नवयुवती—कमरे में रखे आलीशान सोफे पर जाकर बैठ गई। पांचों एक ओर को आश्चर्य-चकित खड़े रह गए।

"बैठो ···।" उसने आदेशात्मक स्वर में कहा।

सब के सब बैठ गए। नवयुवती मुस्कराई। लेकिन उसकी मुस्कान रहस्यमयी थी। अभी कुछ ही क्षण बीते थे एक आदमी ने प्रवेश किया। उसने भी अपना चेहरा स्कॉर्फ से ढंक रखा था। उसने कॉफी और नाश्ते की ट्रे बीच में रखी मेज़ पर रख दी। और वापस हो गया।

"आप लोग डरें नहीं—कॉफी पियें—नाश्ता करें। बातें बाद में होंगी।"

मजबूरी थी। सभी ने कुछ न कुछ लिया। फिर कॉफी पी। सभी के मन में सवाल उठ रहे थे, 'आखिर चक्कर क्या है ?'

'यह नवयुवती हम से क्या चाहती है ?"

नाश्ते के बाद नवयुवती ने दस हजार रुपए की एक गड्डी करीब रखे ब्रीफ केस से निकालकर सामने डालते हुए कहा, "लो सम्भालो यह पेशगी।"

सभी के चेहरों पर अजीब-सी मुस्कान थिरकने लगी। फिर भी मोटू ने सवाल किया, "आप हैं कौन ? और हमारे ऊपर यह मेहरबानी क्यों कर रही हैं ?"

"आप लोग जासूस हैं—बस इसीलिए आपको दस हजार पेशगी दी जा रही है। आज से हमारी समस्याओं का निदान खोजना—आप लोगों का काम है।"

"समस्या क्या है ?" मास्टर घसीटाराम ने टांग अड़ाई।

"यह आपको कल बताई जाएगी।"

"तब रुपया भी हम कल ही लेंगे।"

"जी नहीं—हमें विश्वास है—आप लोग हमारे काम के आदमी हैं। इसीलिए हम दस हजार पेशगी दे रहे हैं। काम कल आपके आफिस में हम फोन द्वारा सूचित कर देंगे।"

रुख से ही जाहिर था, 'यदि इसका कहना हमने नहीं माना तो बात बिगड़ जाएगी। तब यहां से सम्भव है निकल पाना भी कठिन हो जाए।'

मोटू ने दस हजार की गड्डी उठाली। साथ ही बोला, "अब हमें जाना है।"

"चलो—।" नवयुवती तुरन्त ही उठकर खड़ी हो गई।

सभी उसके पीछे चल दिए।

दस ही मिनिट बाद—सभी नवयुवती के पीछे-पीछे कार तक आए। नवयुवती ने उन्हें कार में बिठाया।

इंजन स्टार्ट किया—और पूरी रफ्तार पर कार छोड़ दी।

एक बार फिर कार भागने लगी।

अधिक देर नहीं लगी। एक मोड़ पर नवयुवती ने कार रोक दी। साथ ही आदेश देने के स्वर में बोली, "कल आप लोगों को मिशन सौंप दिया जाएगा।"

सभी उतर गए। इनके उतरते ही कार घूमी और वापस हो गई।

लम्बू-मोटू, चेलाराम, मास्टर घसीटाराम और डाक्टर झटका—मुंह बाए देखते रह गए।

▭ ▭

पांचों टैक्सी में बैठकर सबसे पहले डाक्टर झटका की डिस्पैन्सरी में पहुंचे। उसने अपना उपचार खुद ही किया। वहीं बैठकर उन्होंने सलाह की।

"दोस्तो, लगता है हम किसी चक्कर में आ गए हैं।" चेलाराम ने दूर की बात कही।

"इसमें क्या शक है?" मास्टर घसीटाराम बोला, "हमें कुछ सोचना चाहिए।"

"बहरहाल हम जासूस हैं—हमें साहस से काम लेना चाहिए।" पतलू बोला।

"तब करें क्या?" डाक्टर झटका ने पूछा।

"देखो, कल क्या काम सौंपा जाता है?" मास्टर घसीटाराम ने अन्तिम निर्णय लिया।

काफी रात गए तक डाक्टर झटका की डिस्पैन्सरी

में वह लोग बातें करते रहे, जागते रहे।

इतना तो वह जान ही गए थे कि वह नवयुवती साधारण नहीं है। वह कौन है? क्या करती है? उसका उद्देश्य उन तक आने और अपने साथ फांसकर ले जाने से लेकर दस हजार की रकम देने और शहर के प्रमुख मार्ग के मोड़ तक छोड़ जाने के बीच—एक ही बात महत्वपूर्ण है कि वह औरत काफी तेज है और उस गिरोह की खास सदस्य है।

ये सुबह निश्चित समय पर आफिस पहुँचे। आज गेट पर कुत्ता नहीं था। बेचारा जंजीर से गर्दन निकाल-कर भाग चुका था।

आफिस में पहुंचे तभी फोन की घंटी बजी। पांचों की नजरें फोन पर जाकर टिक गईं और मंडराने लगीं। अन्ततः मोटू ने ही साहस दिखाया। क्योंकि खुफिया विभाग का चीफ बननें के लिए उसने ही पहल की थी। हालांकि चीफ बनने के लिए डाक्टर झटका की दिली इच्छा थी। अन्ततः मोटू को ही ये सौभाग्य मिला था।

"हैलो···।" मोटू ने फोन उठाकर कहा, "मोटू स्पीकिंग···।"

"हैलो मिस्टर मोटू···कैसे हैं आप?"

"आपकी तारीफ···।"

"अजी मिस्टर मोटू···तारीफ तो उस ऊपर वाले की है जिसने आप जैसे महान जासूस को बनाया।"

"मैंने आपकी तारीफ जानना चाही है और आप मेरी तारीफ बता रही हैं।

"क्या आपने अभी तक मुझे नहीं पहचाना ?"

"क्षमा कीजिएगा—मैं झूठ नहीं बोलता—मुझे तो याद नहीं आ रहा है कि मैंने आपको कहीं देखा भी है या आपकी आवाज सुनी है।"

"मिस्टर मोटू...।"

उधर मोटू ने फोन से अटैच्ड टेपरिकार्डर का बटन दबा दिया था। अभी वह नवयुवती आगे कुछ कह पाती मोटू ने कहा, "जल्दी कहिए क्या बात है ? मुझे और भी काम हैं—बाहर मुझसे मिलने वालों की लम्बी लाइन लगी है।"

"मैं वही नवयुवती हूं—जिसकी कार में बैठकर आप लोग घूमने गए थे।"

"कब ?"

"कल शाम को...?"

"क्षमा कीजिएगा—ऐसी कोई घटना तो मुझे याद आती नहीं। खैर! आप फिर कभी फोन कीजिएगा—इस समय मैं बिजी हूं—सॉरी...।" इसके साथ ही मोटू ने फोन रख दिया।

फोन रखते ही पतलू ने पूछा, "कौन देवी जी हैं—क्या चाहती हैं ?"

"वही कल वाली देवी जी हैं—मैंने पहचानने से इन्कार कर दिया है। कह दिया है—'मैं नहीं जानता न तो मैंने कभी उन्हें देखा और न ही उनकी आवाज सुनी है।' अब बोलो—कैसी रही ? मेम साब के दस हजार गए काम से या नहीं !"

सभी के चेहरों पर प्रसन्नता के भाव तिर आए।
खुशी से चेहरे खिल गए।

हरे-हरे नोट सभी की आंखों के आगे हवा में तैरने लगे।

एक बार को मास्टर घसीटा, डाक्टर झटका, चेलाराम और पतलू को यह स्वीकार करना पड़ा—कि मोटू वाकई दिमाग का धनी है।

उसने उस औरत से जान छुड़ाने का अच्छा रास्ता अख्तयारा है।

"लेकिन यार, अब एक बात है?" पतलू ने अपना दिमाग टटोलते हुए कहा, "हमें बस औरत से बचना चाहिए—वह काफी तेज है—वह अकेली नहीं है। उसके साथ पूरा गिरोह है। कहीं ऐसा न हो ···।"

"अब हम उसे हाथ नहीं रखने देंगे···।" मोटू ने तुर्रे के साथ कहा।

तभी दरवाजे पर दस्तक पड़ी।

सभी चकित रह गए। चेलाराम ने अपनी खड़ी हो गई चोटी को अंगुली में फंसाकर तेजी से मरोड़ना शुरू किया। वास्तव में वह सोचने लगा था, 'क···क···कौन आया होगा? कहीं, वही औरत तो नहीं···?'

"पतलू···देखो···कौन है—?"

"मोटू दोस्त, तुम्हीं देखो न—।"

"मैं कैसे देख सकता हूं—मैं चीफ ऑफ स्टॉफ हूं।"

दस्तक फिर पड़ी। घसीटाराम अपनी ऐनक सम्भालते हुए दरवाजे की तरफ बढ़ा। शेष लोग तुरन्त ही

इधर-उधर हो गए।

मोटू ने दरवाजा खोला। दरवाजे पर एक मुनीम खड़ा था। उसने ऐनक में से घूरते हुए कहा, "डाक्टर झटका प्रसाद हैं ?"

"किस खुशी में—?"

"उन्हीं से बात करनी है।"

"वह जरूरी काम में लगे हैं।"

"उनके लिए मैं बहुत जरूरी हूं—कह दो—वरना तुम सब मुसीबत में···।"

"बस···बस···आगे बोलने की जरूरत नहीं है।"

मास्टर घसीटा ने भीतर आकर खबर दी। पता चलते ही डाक्टर झटका के मुंह का जायका बिगड़ गया। उसने मोटू से कहा, "प्यारे मोटू···इस इमारत का किराया न दिया तो सेठ···।"

"बुलाओ उसे···।" मोटू ने बड़े तुर्रे से कहा, "क्या हमें उसने कोई चोर उचक्का समझ रखा है।"

मास्टर घसीटाराम ने उस मुनीम टाइप आदमी को भीतर ले लिया। कुछ देर बाद जब वही आदमी बाहर निकला तो सौ-सौ के दस नोट गिनता निकला।

समय तेजी से बीत रहा था। सभी लोग मंसूबे बना रहे थे। तभी फिर दस्तक पड़ी। मास्टर घसीटाराम जैसे इस काम के लिए एक एक्सपर्ट घोषित हो चुका था। वह गर्व के साथ दरवाजे पर पहुंचा। जैसे ही उसने दर-वाजा खोला वैसे ही बाहर से एक जोरदार ठोकर दर-वाजे पर पड़ी—मास्टर घसीटाराम उछलकर एक ओर

को गिरा। दूसरे ही क्षण एक छरहरे कद काठी की नवयुवती ने आंधी, तूफान की रफ्तार से प्रवेश किया। और रिवाल्वर दिखाते हुए बोली, "मुझे पहचानते हैं आप लोग ?"

"जी ··· जी ··· जी नहीं ···।" करीब-करीब सभी के मुंह से निकला।

उधर नवयुवती ने गोली चला दी—'पिट् ···।' गोली निकली और उसने मेज पर रखे गुलदस्ते के टुकड़े-टुकड़े उड़ा दिए।

"यह गोली—जिसने गुलदस्ते के परखचे उड़ा दिए—तुम में से किसी एक की खोपड़ी—में सुराख भी कर सकती थी।"

"देवी जी आप ···?" मोटू घिघिया पड़ा।

"मिस्टर मोटू इसमें पांच गोलियां हैं—तुम लोग भी पांच हो—एक-एक काफी रहेगी।

लेकिन देवी जी ··· आप चाहती क्या हैं ?"

उसने हाथ में लटका रखा बैग खोला। इसमें से पांच पैकेट निकाले और मेज पर फेंकते हुए बोली, "सभी पर एड्रस लिखे हैं—इन्हें सकुशल पहुंचा दो। किसी तरह की मक्कारी या जालसाजी की तो ··· याद रखना ··· मेरे रिवाल्वर में हमेशा आधे दर्जन बुलैट तैयार रहते हैं।"

"लेकिन आप ···।"

"काम हो जाए—यदि—तुम लोगों ने ···।" बाद के शब्द उसने कहे नहीं—मुस्करा दी। मुस्कान के साथ

उसने रिवाल्वर बैग के हवाले की और दरवाजे की ओर मुड़ी। दरवाजा खोलने से पहले उसने कहा, "शाम को दस हजार और मिलेंगे।"

वह तुरन्त ही दरवाजे से बाहर निकल गई।

मोटू, माथा पकड़कर बैठ गया।

घसीटाराम अपनी कमर सहलाने लगा।

चेलाराम की बोछी अब भी अंगड़ाई ले रही थी।

पतलू धीरे-धीरे बुद्बुदाया, "मरवा दिया इस मोटू ने, जाने किन नक्षत्रों में इसने उस मेम साब की कार में बिठवा दिया था।"

मोटू ने पतलू की ओर घूर कर देखते हुए कहा, "अब तुम बोलोगे नहीं—तुम सब नकारा हो। मुझे ही कुछ करना होगा।"

कुछ देर सन्नाटा रहा। उपरान्त मास्टर घसीटाराम को मोटू ने इशारा किया तो उसने दरवाजा बन्द कर दिया।

सभी पास-पास आ गए।

"हमें देखना चाहिए—इन पैकेटों में क्या है?" डाक्टर झटका ने अपनी बहुमूल्य सलाह दी।

"नहीं—हम कुछ भी नहीं देखेंगे। हम जासूस हैं। अपनी पार्टियों पर हमें विश्वास कायम करना चाहिए।"

इसके बाद ही सभी धीरे-धीरे बातें करने लगे।

▭ ▭
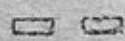
सबसे पहले डाक्टर झटका ने पैकेट उठाया और

बाहर निकला। आफिस के बाहर निकलकर वह फुट-पाथ पर ठीक इस तरह लम्बे कदमों से चलता चला गया जैसे उसे दीन दुनिया की खबर न हो।

उसके बाद मास्टर घसीटाराम निकला गेट से बाहर निकलकर उसने अपना चश्मा साफ किया—फिर एक ओर को खड़े होकर टैक्सी की प्रतीक्षा करने लगा।

चेलाराम और पतलू साथ-साथ निकले। वह रास्ता पार करके दूसरी साइड पर आ गए। दूसरी साइड पर एक जलपान-गृह की दूकान थी। दोनों उसमें जाकर बैठ गए। दोनों ने कॉफी मंगवाई। पीते हुए दोनों ने कुछ बातें भी कीं। बिल अदा करके पहले चेलाराम चला गया। पतलू कोई घटिया-सा अखबार उठाकर पढ़ता रहा। फिर वह भी बाहर निकला।

अन्त में निकला मोटू। आफिस बन्द करके सड़क पर आया तो वह कल की शाम को कोस रहा था, 'जाने वह कौन-सी मनहूस घड़ी थी। जब उस नवयुवती के चक्कर में आ गया।'

'सारा किया धरा—इस डाक्टर के बच्चे का है—जिसने प्राइवेट खुफिया एजेन्सी खोलने की मनहूस सलाह दी।

तभी उसके मन ने कहा, "कुछ भी हो—दस हजार की मोटी रकम हाथ में आ गई है।"

'इतना ही नहीं—इस काम के बाद हमें दस हजार और भी मिलेंगे।'

वह विचारों में डूबा फुटपाथ पर चलते हुए चौराहे

पर आया और टैक्सी करके चल पड़ा।

काफी देर तक टैक्सी भागती रही। एक मोड़ पर टैक्सी वाले ने टैक्सी रोक दी। साथ ही मोटू की तरफ मुड़कर देखते हुए बोला, "श्रीमान जी, आ गया आपका फॉरेस्ट होटल!"

"फॉरेस्ट होटल—यहां! यहां कहां है भाई?"

"महाशय, वहां जाने वालों को हम यहीं उतार देते हैं।"

"क्यों…?"

"क्योंकि वहां हम लोग जाना पसन्द नहीं करते…।"

"लेकिन क्यों?"

"बस—वैसे ही—हमें तो आप यहीं तक भाड़ा दीजिए—दस कदम पर होटल है—चले जाइए।"

"हुं…।" मोटू नफरत से हुंकारा।

उतर कर उसने बिल अदा किया। और जैसे ही आगे बढ़ा—टैक्सी वाले ने जोरों की छींक मारी, "अ… अ…आंक छीं…।"

"सत्यानाश…।" मोटू ने बुरा-सा मुंह बनाया और घूरकर टैक्सी वाले की तरफ देखा।

टैक्सी वाला अपनी गाड़ी मोड़ रहा था।

मोटू के दिमाग के स्क्रू तभी जल्दी-जल्दी ढीले होने लगे—कसने लगे।

'टैक्सी वाले ने मुझे यहीं क्यों उतार दिया?'

'वह मुझे लेकर वहां तक क्यों नहीं गया?'

'दोस्त मोटू—।' वह अपने आपसे बोला, 'मुझे तो

ये फॉरेस्ट होटल अच्छी जगह नहीं लगती।'

फिर भी आगे तो बढ़ना ही था सो वह आगे बढ़ा? अभी वह फॉरेस्ट होटल के गेट पर पहुंचना ही चाहता था कि भीतर से तेज रफ्तार आती लकदख गाड़ी को देखकर उसके छक्के छूट गए। वह यदि एकदम उछल न जाता तो गाड़ी के नीचे आ जाता।

मोटू अभी उठ पाता—गाड़ी दूर नजर आते मोड़ को पार कर गई।

किसी तरह मोटू ने अपना हुलिया सही किया। गेट से भीतर घुसा। गेट पर खड़े दरबानों ने भेद भरी नजरें डालीं—लेकिन रोका नहीं।

होटल के हॉल में जैसे ही घुसा—उसकी नाक में नशीली चीजों की गंध तेजी से घुसी। हॉल में अन्धेरा था। कहीं-कहीं टेबुलों पर शेड की रोशनी थी। सारे हॉल में धुआं मंडरा रहा था।

'अरे यह जगह तो ...।' मोटू का माथा ठनक गया, "—यह तो उलटे सीधे नशे करने वाले लोगों का अड्डा है।"

मोटू को यहां का माहौल खतरनाक भी लगा। जितने चेहरों पर भी उसकी नजर पड़ी—सारे के सारे गुंडे नजर आए।

मोटू के भीतर उथल-पुथल होने लगी। वह सीधे काउण्टर पर पहुंचा।

"मिस्टर बॉग से मिलना है।" मोटू ने काउण्टर पर बैठे आदमी से पूछा, "क्या आप बता सकते हैं—?"

उस आदमी ने जो एकदम सूखा हुआ लग रहा था। उसने चश्मे में से मोटू को घूरा। वास्तव में वह बेचारा एक आंख का राजा था। सभी को वह एक नज़र से देखता था। उसने एक निश्चित दिशा में इशारा कर दिया।

मोटू ने सामने की ओर देखा। कमरे के दरवाजे पर एक छोटी-सी नेम प्लेट चमक रही थी, 'मैनेजर।'

वह उसी ओर को बढ़ गया। दरवाजे पर परदा पड़ा था। उसने परदा थोड़ा-सा हटाया, 'मैं जासूस हूं—मुझे खुले दिल दिमाग से काम करना चाहिए।'

"कौन है—?" भीतर बैठा व्यक्ति जैसे चिंघाड़ा, "मैं पूछता हूं कौन गधा है वहां ?"

मोटू इस बीच कुछ सोच चुका था। धड़ल्ले से भीतर घुसा, "मिस्टर आप ही मिस्टर बॉग हैं ?"

"हूं—फिर ?"

"मुझे आपसे काम है।"

"बको···।"

"मैं बकने के लिए नहीं आया हूं—काम से आया हूं।"

"तो मैं क्या करूं—?"

मोटू ताव तो खा ही गया था। उसने जेब से एक पैकेट निकाला— वही जो वह नवयुवती दे गई थी। उन्हीं में से एक मोटू के लिए भी था। पैकेट देखते ही मिस्टर बॉग की आंखें चमकने लगीं। उसने कुर्सी से उठते हुए हाथ बढ़ाया—लेकिन मोटू ने पैकेट मेज पर उछाल

दिया। साथ ही बोला, "इसे उठाइए और कहिए ओ० के०...।"

उसने घूरकर देखते हुए पैकेट उठाया। उसे हाथों ही हाथों में उसने तौला और कहा, "ओ० के० ...।"

"गुड बॉय ...।" मोटू एकदम घूमा।

"मिस्टर...।" बॉग बोला, "एक मिनिट।"

मोटू ने अदा से उसकी ओर घूमते हुए कहा, "बको ...।"

"यह पैकेट—तुमने मुझे हाथ से क्यों नहीं दिया।"

"मेरा काम, पैकेट पहुंचाना था—पहुंचा दिया। हाथ से देने के लिए नहीं कहा गया था। समझे मिस्टर बॉग ...।"

"हूं, तो तुम नई भर्ती हो।"

"और कुछ बकना है आपको ?"

"तुम बहुत ज्यादा बदतमीज़ हो।"

"तमीज पहले खुद सीखो मिस्टर बॉग ...।"

बॉग उछल कर मोटू के आगे आ गया।

"मोटू, लगता है तुम कुछ ज्यादा ही शेखी बघार गए। यह आदमी काफी खतरनाक लगता है।"

"तुमने मेरी बेइज्जती की है।"

"जो मेरी बेइज्जती करता है—मैं उसके बाप को भी नहीं छोड़ता मिस्टर बॉग—।"

"भविष्य में तुम यहां नहीं आओगे।"

"यदि भेजा गया तो अवश्य आऊंगा।"

"मैंने अच्छों-अच्छों के होश ठिकाने लगा दिए हैं।"

"उनमें कोई मेरे जैसा ही रहा होगा।"

इसके साथ ही बॉग ने भरपूर ताकत का घूंसा मोटू की खोपड़ी पर खींच मारा! लेकिन मोटू झुक गया। झुकते ही बॉग का घूंसा दीवार से टकरा गया। हड्डियां चरमरा गईं बॉग के हाथ की। उसके मुंह से भयानक दर्दनाक चीख फूटी।

"मौका अच्छा है मोटू—कर दे इसका हिसाब—समझ ले सिक्का जम गया।" उसने इस विचार के साथ ही बॉग को एक लात जड़ दी। बॉग लात खाते ही मुंह के बल गिरा। इसके साथ ही मोटू उस पर उछलकर खड़ा हो गया और उसके सिर पर उसने दो-चार करारी ठोकरें जड़ दीं।

बेचारे बॉग के साथ अजीब बीती। हाथ का कचूमर तो निकल ही गया था, खोपड़ी भी बोल गई।

मोटू ने अब वहां रुकना उचित न समझा। वह तुरन्त ही बैल की तरह उछलता बाहर आया। एक नजर उसने होटल के हॉल में डाली। वहां पहले जैसा ही माहौल था। साथ हीं संगीत भी गूंज रहा था।

मोटू तेजी के साथ बाहर निकल गया।

▭ ▭

उसी खण्डहरनुमां हवेली में। एक व्यक्ति हॉल में खड़ा था—यह वही व्यक्ति था—जिसके सामने मिस बबाल ने इन पांचों को पेश किया था। कमरे में वह बेचैनी के साथ टहल रहा था। यकायक जेब में रखा

जेबी ट्रांसमीटर पीं···पीं···पीं करने लगा।

उसने तुरन्त ही उसे जेब से निकाला और उसका बटन दबाकर बोला, "यस स्पीकिंग···।"

"बॉस तुम्हारे आदमी ने—मिस्टर बॉग के साथ हाथापाई की है। उसका हाथ तोड़ दिया है। सिर फाड़ दिया है।- यह बदतमीजी मुझे पसन्द नहीं। बॉस, यह तुम्हारा आदमी था—कोई और होता तो वह यहां से जीवित नहीं जा सकता था ओवर···।"

"मिस्टर, एक बात कान खोल कर सुन लो—तुम्हारे आदमी मिस्टर बॉग की पहले भी ढेरों शिकायतें मेरे पास आ चुकी हैं। आज तक मेरे किसी आदमी ने बदतमीजी नहीं दिखाई। लेकिन आज जो आदमी गया था—वह नया था—उसके साथ भी उसने हरकत की होगी और उसने जवाब दे दिया। पता चलाओ बात क्या है? ओवर···?"

ट्रांसमीटर पर सम्पर्क खत्म हो गया। ट्रांसमीटर जेब के हवाले करते हुए वह आदमी शून्य को घूरने लगा, 'उन पांचों में ऐसा तो कोई सूरमा नजर आता नहीं था। फिर किसने बॉग जैसे खतरनाक आदमी के साथ हाथापाई की? हाथापाई ही नहीं की बल्कि उसका हाथ भी तोड़ दिया और सिर फाड़ दिया।'

जाने क्यों उसे इस बात पर विश्वास नहीं आया।

▭ ▭

उधर पांचों—डाक्टर झटका, मोटू-पतलू और

मास्टर घसीटाराम के साथ-साथ चेलाराम भी आफिस पहुँचा।

डाक्टर झटका ने सामने पड़ते ही भन्नाए स्वर में कहा, "यारो, मैं जिस आदमी के पास गया था—वह तो नगर का समाजसेवी द्वारका प्रसाद है। बड़ा ही मक्कार और चापलूस।"

मोटू ने जब अपनी हरकत बयान की तो सभी देखते रह गए। पतलू ने बतलाया, "मैं जिसके पास गया था—वह एक थोक व्यापारी है। पहले तो उसने जय श्रीकृष्ण की की, फिर पास बिठाया और फिर धीरे से पैकेट लेकर गायब कर दिया।'

घसीटाराम ने चश्मा सम्हालते हुए कहा, "उसका नाम नीना काँचवाला है। पूरी अंग्रेज लगती है। बड़ी ही शातिर है। अच्छे खासे फ्लैट में रहती है।"

"मैं तो जिसके पास गया था—वह एक पुजारी जी हैं। पहले तो उन्होंने मेरा हाथ देखा और कहा, "बच्चा, तुम्हारे दिन अब फिरने वाले हैं। जल्दी ही माया तुम्हारे कदम चूमेगी।' फिर कमबख्त ने पैकेट लेकर अपनी लंगोटी में छुपा लिया।"

सबसे ऊंचा खेल मोटू का रहा। लेकिन मोटू का चेहरा रह-रहकर घनी उदासी में डूब जाता।

"मोटू दोस्त, तुम कह रहे हो तुमने उसे मारा—लेकिन तुम्हारे चेहरे पर उड़ती हुई हवाईयां देखकर कोई भी कह सकता है—तुम पिटकर आए हो। सच बताओ सच्चाई क्या है—?" मास्टर घसीटाराम ने अपने चश्मे

में से आंखें चमकाईं।

तभी दरवाजे पर दस्तक गूंजी। घसीटाराम को ही दरवाजा खोलने का इशारा मोटू ने किया।

घसीटाराम ने पहले तो ऐनक सम्हाली और फिर धीरे से दरवाजे की सिटकनी उतारी। सामने—सुबह वाली नवयुवती को देखकर घसीटाराम उछलकर हट गया।

नवयुवती तुरन्त ही भीतर आ गई। उसने बैग खोला, दूसरे ही पल उसके हाथ में रिवाल्वर आ गया। रिवाल्वर देखते ही सभी के चेहरे उतर गए।

"आपका काम हमने कर दिया है—अब यह रिवाल्वर किसलिए दिखा रही हैं आप ?"

"जानना चाहती हूं—मिस्टर बॉग के साथ बदतमीजी किसने की है ?"

"मैंने, क्यों—?"

"यही तो मैं जानना चाहती हूँ।"

"मेम साब, हमें सभी कुछ बर्दाश्त है—बेहूदगी नहीं। उसने हमारे साथ बेहूदगी की—हमने उसे बेहूदगी का मजा चखा दिया।"

"तुम जानते हो—वह कौन है—?"

"इससे मुझे क्या मतलब है—? कोई भी हो—हम काम करते हैं पैसा लेते हैं। इज्जत नहीं बेचते।" मोटू ने किसी सफल अभिनेता की तरह संवाद बोला।

मोटू की दिलेरी का विश्वास सभी को करना पड़ा। चेलाराम, घसीटाराम, पतलू और डॉक्टर झटका का

सीना भी गर्व से चौड़ा हो गया।

"व्हेरी गुड···मिस्टर मोटू···हमें ऐसे ही आदमियों की तलाश थी।"

"हम समझे नहीं—।"

"समझ जाओगे—।" उसने अपने बैग से दस हजार की गड्डी निकालकर सामने डाल दी।

"जी नहीं मेम साब—हम इस तरह पैसा नहीं लेंगे। काम डंके की चोट पर करेंगे और पैसा इज्जत से लेंगे।"

"क्या मतलब?"

"पैसा उठाकर हमारे हाथ में दीजिए।"

वह हंसने लगी।

"शायद आपको पता नहीं है—इसी बात पर झगड़ा वहां भी हुआ था। भविष्य के लिए आप याद रखें।" मोटू ने एक्शन दिखाए।

वह नवयुवती वापस चली गई।

नवयुवती के जाने के बाद पांचों पांडव करीब-करीब आकर खड़े हो गए। सभी के मन में एक बात थी,—"चौबीस घंटे के भीतर हमने बीस हजार कमाए हैं।"

यह बात उनकी समझ में आ चुकी थी—जो पैकेट उन्होंने सफाई के साथ उनके ठिकानों पर भेजे हैं—उनमें अवश्य ही ऐसी कोई चीज थी जो लाखों की हो सकती है। जो काम चोरी से किए जाते हैं—वह गलत तो होते ही हैं।

वह एक बार फिर गम्भीरता से विचार करने लगे।

कुछ ही देर बाद फोन की घंटी बजी। मोटू ने ही

उठाया—"हैलो···।"

"मैं कल वाली हूं जिसने तुम्हें चौबीस घंटे के अन्दर बीस हजार का फायदा करवा दिया है।"

"हुक्म कीजिए।"

"तुम लोग अपने ऑफिस की अखबारों में पब्लिसिटी करो। पैसा हम देंगे। और हां—समय निकालकर तुम अड्डे पर आ जाओ। लेकिन याद रखना—हमारे बारे में किसी को भी खबर न हो।"

"जी बहुत अच्छा।"

"चाहो तो आज रात को ही आ जाओ।"

"मुझे रास्ता नहीं पता।"

"कोई बात नहीं उस मोड़ तक तो आ ही सकते हो जहां मैंने तुम्हें छोड़ा था। वहां टैक्सी से उतरकर इंतजार करना—ठीक नौ बजे मैं तुम्हें लेने पहुँच जाऊँगी।"

"ठीक है आ रहा हूँ।"

"नौ बजे—मैं आ जाऊँगी।"

इसके बाद ही सम्पर्क खत्म हो गया। फोन रखते हुए मोटू का चेहरा डूब गया। उसने फोन पर हुई बातचीत को ज्यों का त्यों बतला दिया।

"दोस्त मोटू···हम फँसते जा रहे हैं।" पतलू बोला।

"कहीं ऐसा न हो हम कानून के हाथों धर लिए जाएँ···।" मास्टर घसीटाराम ने आशंका व्यक्त की।

डॉक्टर झटका की हालत और भी खराब नजर आई। पतलू और चेलाराम के चेहरे से लग रहा था—उनके दिमाग की हालत चिंताजनक है। वह बेचारे तो

जैसे कुछ भी कहने-सुनने की स्थिति में नहीं रह गए थे।

मोटू ने जासूसी दिमाग दौड़ाते हुए कहा,—"सारा दिन बीत गया—हमने पेट पूजा नहीं की। कहीं चलते हैं, पहले पेट पूजा करते हैं—फिर आगे की सोचेंगे—लेकिन अब हमें कदम-कदम पर सोच-समझकर चलना चाहिए। सम्भव है हमारे पीछे पुलिस लग जाए और हम बिना मतलब ही मुसीबत में आ जाएँ।"

उसने खिड़की की राह बाहर की ओर देखा। सड़क की दूसरी ओर दो आदमी खड़े नजर आए। दोनों ही जिस ढंग से खड़े थे—उनकी एक्टिंग देखकर मोटू को समझते देर न लगी कि वह लोग बाकायदे उन पर नज़र रखे हुए हैं।

मोटू के बाद—शेष लोगों ने भी उन्हें पहचाना।

"ये लोग पुलिस के आदमी भी हो सकते हैं और उस गिरोह के भी।" पतलू ने अपनी राय दी।

"लेकिन हमें—अपनी ओर से वह जाहिर नहीं करना चाहिए कि हमने इन्हें देख लिया है।" मोटू ने नुक्ते की बात कही।

सभी ऑफिस से बाहर रहे लेकिन इस बात का उन्होंने ध्यान रखा कि उनका कोई पीछा करता है या नहीं?

बाहर निकलकर अभी ये कुछ कदम चले थे कि एक टैक्सी करीब आकर खड़ी हो गई। ड्राइवर ने बड़ी ही अजीजी के साथ पूछा—"कहीं चलेंगे साहब···?"

"नहीं भाई···नहीं।" डॉक्टर झटका ने मना कर दिया।

चौराहे पर आकर उन्होंने उन अनेक टैक्सियों को मना कर दिया जो करीब आकर रुकीं और जिनके ड्राइ-वरों ने कहीं चलने को पूछा। फिर एक उस टैक्सी को मोटू ने आवाज़ देकर रोका जो सीधी चली जा रही थी।

ये सारे के सारे बैठे। मोटू ने होटल नीलकमल चलने के लिए कहा। लेकिन तभी वह चौंक गया,—"अरे यह तो वही टैक्सी वाला है—जिसने ऑफिस से निकलते ही टैक्सी करीब रोकते हुए कहीं चलने के लिए पूछा था।"

टैक्सी में मोटू बैठ गया लेकिन मन में शंकाएँ मँड-राने लगी थीं। टैक्सी अपनी रफ्तार से भागने लगी थी। जान-बूझकर मोटू चुप रहा। उस समय ऐसी किसी तरह की आशंका व्यक्त करना उचित भी नहीं था।

टैक्सी ने जब नीलकमल वाला रास्ता छोड़ दिया तो सभी चौंके। मोटू ने कहा,—"मिस्टर चालक महोदय, आप हमें कहां ले जा रहे हैं?"

"अभी पता चल जाएगा।"

आखिर वही हुआ जिसका डर था। सभी चकित रह गए।

उधर टैक्सी चालक ने कार की रफ्तार बढ़ा दी। कौन—किससे क्या कहे? क्या पूछे? टैक्सी की रफ्तार इतनी तेज थी कि पूछो मत। सब के सब भय से कांपने लगे—अब टक्कर हुई या तब टक्कर हुई।

देखते ही देखते टैक्सी एक पुरानी सी इमारत के गेट से भीतर पहुंची। और इमारत के पीछे जा खड़ी हुई। टैक्सी चालक बड़ा ही चुस्त चौबंद नजर आया। उसने

टैक्सी से उतरते हुए कहा,—"उतरिए मोटू-पतलू एण्ड कम्पनी और याद रखिए—चाल फिर दिखाई तो सभी की खोपड़ियों पर चकरीदार सुराख बना दूंगा।"

रहा-सहा साहस भी जाता रहा।

"हे भगवान बैठे-बिठाए कहां से दिमाग में प्राईव्हेट जासूसी ऑफिस खोलने का ख्याल आया!"

"अब ये नई मुसीबत क्या है? ईश्वर ही जाने!"

इमारत के पीछे अंधेरा तो था ही—माहौल भी बड़ा ही मनहूस था। कहीं, रौनक नाम को भी नहीं थी।

उसने टैक्सी से उतरते ही रिवाल्वर निकाल लिया था। सभी को हांफते हुए—वह एक छोटे-से दरवाजे के पास ले गया। जैसे ही ये करीब पहुँचे—दरवाजा अपने आप खुल गया।

"चलो भीतर।"

टैक्सी चालक की आवाज पर उन्हें भीतर घुसना पड़ा। उस छोटे से दरवाजे के भीतर पहुँचते ही पता चला—कुछ कदम के फासले पर—एक दरवाजा और है तथा दरवाजे के एक ओर से नीचे की ओर सीढ़ियां गई हैं।

ये सीढ़ियां उतरने लगे।

सीढ़ियां जहां खत्म हुई थीं—वह एक कमरा था। कमरे में एक ओर को आलीशान मेज के पीछे—सिर घुटे और प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति ने अपने चश्मे में से एक पतली नज़र उन पर डाली—फिर चश्मा उतार कर मेज पर पड़ी लाल रंग की फाइल पर रखते हुए उन्होंने कहा,—"आइए मोटू-पतलू एन्ड कम्पनी प्राइ-

व्हेट लिमिटेड …।"

अभी तक इनकी समझ में आया नहीं था कि ये कहां जा फँसे हैं। ये मेज के करीब पहुंचकर खड़े हो गए। वह आदमी जो इन्हें फांसकर लाया था एक ओर को खड़ा हो गया।

"खड़े क्यों हो, बैठो—।" उस सिर घुटे आदमी ने इनकी ओर देखते हुए आदेशात्मक लहजे में कहा।

सभी कुर्सी खींचकर बैठ गए।

"हमें खबर लगी है आप लोगों ने प्राइव्हेट जासूसी संस्था खोली है।"

"सभी जानते हैं।" मोटू ने जवाब दिया,—"हमने बाकायदे बोर्ड लगाया है।"

"लेकिन सभी लोगों को यह पता नहीं है कि आप लोगों ने हेरोइन सप्लाई करना शुरू कर दिया है।"

"जी!" सभी बगलें झांकने लगे।

सभी के चेहरे लटक गए।

"हमारा भी काम करो—हम तुम्हें अच्छा मुनाफा देंगे। बोलो तैयार हो?"

"आपका परिचय …?"

"परिचय! हुँ … ऐसे लोग क्या कभी परिचय दिया करते हैं? उन लोगों ने जिनका काम तुम कर रहे हो—उन्होंने अपना परिचय दिया है?"

"नहीं …।"

"फिर हमसे क्यों पूछ रहे हो?"

सभी एक दूसरे की सूरत देखते रह गए।

"बोलो, जवाब दो—।" उस सिर घुटे आदमी ने एक बार फिर अपनी बात कही।

"हम सोचकर बताएंगे।"

"जरूर सोचो—।" उस सिर घुटे आदमी ने कहा, और फिर अपने आदमी की ओर इशारा करते हुए बोला —"इन्हें दूसरे कमरे में पहुंचा दो।"

"जी!" मोटू चौंका,—"तो क्या आप हमें कैद में रखेंगे।"

"नहीं कैद कैसी? उस कमरे में तुम लोगों को सारी सुविधाएँ मिलेंगी।"

"नहीं...हम फिर कभी आएंगे।"

"कल किसने देखा है—मुझे जब तक तुम लोग अपना निर्णय नहीं देते तब तक मैं यहां से तुम लोगों को बाहर नहीं निकलने दूंगा।"

मजबूरी थी। सब-के-सब दूसरे कमरे में पहुँचे। उस आदमी ने इन लोगों के भीतर जाते ही दरवाजा बाहर से बंद कर दिया।

कमरा वाकई आलीशान था। कमरे में आराम के सारे साधन मौजूद थे। मेज पर खाना भी लगा हुआ था। खाना देखकर उनकी जीभ में पानी आ गया। डॉक्टर झटका ने कहा,—"दोस्तो, मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं, मैं तो खाना खाऊंगा।"

"दोस्त, हमारे गृह नक्षत्र अच्छे नहीं हैं।" घसीटा-राम ने बुरा-सा मुंह बनाते हुए अपनी बात कही।

"तुम लोग औरतों की तरह बातें करना छोड़ो और

झटकाराम···होश की दवा करो···हम यहां का पानी भी नहीं पियेंगे। मोटू ने ऐंठकर कहा।

"क्यों···?" झटका ने आंखें निकालीं।

"क्योंकि एक जगह हम फंस चुके हैं—अब दूसरी जगह हम नहीं फंसना चाहते।"

"बेकार की बात है—।" पतलू बोला, "हम खायेंगे पियेंगे नहीं तो उस बूढ़े को शक पड़ जाएगा।"

"पतलू ठीक कहता है—।" चेलाराम बोला, "अमां खाने-पीने में क्या रक्खा है? हम करेंगे तो वही जो हम चाहेंगे।"

"तो क्या ऐसा करना, धोखेबाजी नहीं होगी?" मोटू बोला।

"धोखेबाजों के साथ धोखा करना न तो अपराध है और न ही पाप! जैसे के साथ तैसा पेश आना नीति है।"

इस तरह सब के सब एक तरफ हो गए और मोटू अकेला रह गया।

हार कर सभी के साथ मोटू को भी मेज पर रखे खाने की प्लेटों में से एक अपनी ओर खींचनी पड़ी। पेट में जब खाना गया तो मोटू बोला, "मैंने सोच लिया है।"

सभी ने उसकी ओर आंखें फैलाकर देखा।

"यदि हमने इंकार किया तो ये बूढ़ा घाघ हमें किसी भी कीमत पर यहां से निकलने नहीं देगा—।"

"हां दोस्त मोटू···एक के बाद दूसरी मुसीबत में हम घिरते ही जा रहे हैं—पहली मुसीबत का इलाज अभी

हमारे भेजे में नहीं है, यह दूसरी मुसीबत हमारी खोपड़ी पर तांडव नृत्य करने लगी।" डाक्टर झटका बोला।

"दोस्त, हमारे गृह नक्षत्र अच्छे नहीं हैं।" घसीटाराम ने बुरा-सा मुंह बनाते हुए अपनी बात कही।

"तुम लोग औरतों की तरह बातें करना छोड़ो और मेरी सुनो—हम यहां हां कह देते हैं—यह जो काम भी कहता है—उसे हम करने के लिए तैयार हो जाते हैं।"

"हुं···इससे होगा क्या ?" पतलू बोला।

"हम इसकी पकड़ से बाहर तो हो ही जायेंगे। इसके साथ ही साथ हमें यह भी पता चल जाएगा कि ये है कौन ?" मोटू ने धीमी आवाज में कहा।

"तब हमें एक काम और भी करना चाहिए।" घसीटाराम बोला तो सभी उसकी ओर देखने लगे। वह आगे बोला, "हम उन लोगों को तो फांसेंगे ही—लगे हाथ इसे भी पकड़वा देंगे। ये बेचारा भी क्या याद रखेगा किन्हीं प्राइवेट जासूसों से सामना हुआ है।"

सभी हंसने लगे।

"तो फिर इसका काम भी, हम करने का वायदा कर ही दें ?"

"बस···।" डाक्टर झटका बोला, "जिस समय हम, दो-दो गिरोहों पर अपनी दया दृष्टि दिखायेंगे तो हमारे शहर की जनता अपने सिरों पर हमें बिठालेगी।"

"हमें इनाम भी खूब मिलेगा।" चेलाराम ने अपनी चोटी को अंगुली में लपेटते हुए कहा।

"ओय चेलाराम···इनाम की परवाह हमने कभी

नहीं की—हम यह सब जो कुछ भी कर रहे हैं अपने समाज और देश की गन्दगी हटाने के लिए।"

"हां हां क्यों नहीं—।" घसीटाराम तर्क में बोला, "अभी कल दस हजार के नोट हाथ में न आये होते तो अब तक हमें पेट भरने का कोई इलाज खोजना पड़ता।"

"मिस्टर घसीटाराम—तुम्हारी अक्लदानी बड़ी ही कमजोर है—जरा-सा झटका भी बर्दाश्त नहीं करती। अरे मियां—मर्द आदमियों के जीवन में उतार-चढ़ाव तो आते ही रहते हैं। फिर भी मुझे तो ऐसा कोई दिन याद नहीं आता जिस दिन हमने मस्ती की नहीं छानी।"

"छोड़ो यार—।" चेलाराम बोला, "निकलो यहां से और इस बुड्ढे पर ऐसा रंग चढ़ा दो कि ये भी दस-बीस हजार हमारे सामने बढ़ा दे। एक काम इसका भी कर देंगे और दूसरी दफा में इस बेचारे का ही हिसाब करके इससे छुट्टी पायेंगे।"

"राइट यू० आर०...।" मोटू ने करीब की टॉवल से मुंह पोंछा।

उधर बाहर के कमरे में—वही बूढ़ा अपना चश्मा आंखों पर चढ़ाए इनकी बातें सुन रहा था—साथ ही टेप भी करता जा रहा था। एक विशेष टेपरिकार्डर में इनकी बातें टेप हो रही थीं।

इन्हें दरवाजे पर दस्तक देते सुनकर उस बूढ़े ने टेप-रिकार्डर एक ओर को रख दिया। उधर दरवाजे पर खड़े व्यक्ति ने दरवाजा खोला। पांचों—बाहर निकले। सभी अपने को माना हुआ जासूस समझ ही रहे थे।

ये मेज के पास पहुंचकर खड़े हो गए।

बूढे ने अपनी आंखों पर चढ़ा चश्मा माथे पर चढ़ा लिया। फिर घूरकर देखते हुए बोला, "कहिए—क्या फैसला किया आप लोगों ने ?"

"हम काम अवश्य करेंगे लेकिन पारिश्रमिक उचित लेंगे। दूसरी बात—आपको अपना पूरा परिचय देना होगा और हमें अपने गिरोह का सक्रिय एवं सम्माननीय सदस्य नियुक्त करना होगा।"

"तो तुम लोगों को उचित पारिश्रमिक चाहिए…।" वह घूरते हुए बोला, "और मेरे गिरोह की सक्रिय एवं सम्माननीय सदस्यता भी चाहिए।"

"जी…।"

इसके साथ ही उसने अपना हाथ मेज़ के नीचे ले जाकर टेपरिकार्डर निकाला और मेज पर रखा। उसे देखते ही पांचों के चेहरे विभिन्न मुद्राओं में लटक गए। सभी की खोपड़ियां घूम गईं। अक्ल का हाल-बेहाल हो गया। उन्हें इस बात का शक ही नहीं पूरा विश्वास होकर रहा कि, "इस बूढ़े घाघ ने किसी तरह हमारी बातें सुनी ही नहीं, टेप भी कर ली हैं।"

दूसरे ही क्षण उसने टेपरिकार्डर का बटन दबा दिया। इधर बटन दबा—उधर सभी की बातें कमरे में गूंजने लगीं।

'मारे गए…।' मास्टर घसीटाराम की मूंछें कांपने लगीं और ऐनक नाक पर से उछलने के लिए आमादा हो उठी।

बेचारा चेलाराम रोने-रोने को हो उठा—और उसकी बोदी, ठीक एरियल की तरह तन गई और कांपने लगी।

मोटू-पतलू की हालत तो और भी खराब हो गई—उन्हें लगा वह बुरी तरह कांप रहे हैं। डाक्टर झटका बगलें झांकने लगा।

यकायक झटके से उस बूढ़े व्यक्ति ने टेपरिकार्डर बन्द कर दिया। साथ ही गुर्रा उठा, "पारिश्रमिक अच्छा चाहिए—अपने गिरोह की सम्मानित्नीय सदस्यता भी तुम्हें दूंगा···।"

"जी···जी···जी···वो बात ये है कि···।" मोटू घिघियाती सी आवाज़ में बोला।

"शट् अप···।" चीख उठा वह बूढ़ा।

चीख क्या थी—चिंघाड़ थी। मास्टर घसीटाराम की ऐनक उछली और जमीन में गिरते-गिरते बची। चेलाराम की बोदी पांच-सात दफा बैठी और फिर खड़ी हो गई। डाक्टर झटका के होंठ फैल गए और आंखें धंस-कर मुंद गईं। पतलू रोने-रोने को हो उठा। मोटू का मूंछों का बुरा हाल हो गया वह लटक गईं और फिर खड़ी नहीं हो सकीं।

उस बूढ़े आदमी ने दराज़ खोली। सभी उसके हाथ की ओर देखने लगे। जाहिर था—वह शायद रिवाल्वर निकालेगा। सब के सब पैंतरे से खड़े हो गए और मन ही मन निश्चय करने लगे कि जो आदमी करीब ही खड़ा है—उस पर टूट पड़ो और फिर निकल भागो।

बूढ़े ने हाथ ऊपर उठाया और नोटों की एक मोटी गड्डी मेज पर डालते हुए बोला, "उठाओ इसे…।"

एक बार फिर सभी के मस्तिष्क में विचारों का बल्ब तेजी से जलने-बुझने लगा—लुपलुपाने लगा।

"हम तो सोचते थे रिवाल्वर निकलकर सामने आएगा। गोलियां चलेंगी लेकिन यहां तो हरे-हरे नोटों की गड्डी हमारे सामने डाली जा रही है।"

"कहीं ये नोटों की गड्डी…कुत्तों के आगे हड्डी का काम तो नहीं करेगी।"

"उठाओ…उठाओ इसे…।" वह बूढ़ा एक बार फिर चीखा।

मोटू ही नजदीक खड़ा था। चीख के साथ ही उसने गड्डी उठाली।

बूढ़ा जोरों से हँस पड़ा। उसकी हँसी चन्द क्षणों में ही अट्टहास में बदल गई।

पांचों पांडवों की आंखें कपाट पर चढ़ गईं।

किसी की समझ में नहीं आया कि माजरा क्या है? वह सारे के सारे एक ही बात सोचने के लिए विवश थे, "कहते हैं जब बकरे को कसाई हलाल करने के लिए ले जाता है—तो उसके पहले उसे अच्छी-अच्छी चीजें खिलाता है। ये बूढ़ा घाघ, हमें नए-नए नोट दिखा रहा है। बस इसके बाद ही ये हमें कहेगा, लाइन में खड़े हो जाओ धोखे बाजो—मेरे गिरोह में धोखे बाजी की सजा—मौत है।"

यकायक उसका अट्टहास थमा। उसने बड़ी ही

सादगी के साथ कहा, "तुम लोग वाकई बड़े भोले हो—बैठो।"

कदम-कदम पर वह चौंक रहे थे। लेकिन मरते क्या न करते। उसका आदेश हुआ और वह झटके से कुर्सियों पर बैठ गए।

"मिस्टर कुलकर्णी कॉफी भिजवाइए।"

उस आदमी का नाम कुलकर्णी था। वह तुरन्त ही वहां से भीतर की ओर चला गया।

"मैं ··· किसी गिरोह का बॉस नहीं हूं। बल्कि केन्द्रीय खुफिया विभाग का असिस्टेण्ट चीफ हूं। डायमण्ड सीक्रेट हाउस के एजेण्टों पर नजर रखने, उन्हें सहायता व सहयोग करने के लिए ही नियुक्त किया गया हूं। मुझे जब इस बात की खबर लगी कि कुछ लोगों ने शहर में एक प्राइवेट जासूसी संस्था खोली हैं तो चौंक गया। मैंने अपने आदमियों को खबर लाने के लिए भेजा। खबर मिली कि तुम लोगों ने प्राइवेट जासूसी संस्था खोली अवश्य है—लेकिन इसकी तह में तुम लोगों ने किसी गिरोह के लिए काम करना शुरू कर दिया है तो विश्वास नहीं आया। लेकिन फिर खबर मिली कि तुम पांचों ने पांच जगह विशेष प्रकार के पैकेट भिजवाए हैं तो यकीन करना पड़ा कि शायद तुम लोग बहक गए हो।"

पांचों के बुझे हुए चेहरे शनैः शनैः रोशन होने लगे—दमकने लगे।

"असिस्टेण्ट चीफ साहब, आपने तो हमारी जान ही निकाल दी थी। हमें पूरा-पूरा विश्वास हो गया था कि

आज हमारे साथ किसी तरह की अनहोनी होकर रहेगी।" मोटू बोला।

अस्सिटेण्ट चीफ महोदय हँसने लगे। तभी एक आदमी—कॉफी की ट्रे लिए हाज़िर हुआ। उसने सभी के सामने कॉफी के मग रखे और वापस चला गया।

उपरांत—लम्बू-मोटू, डाक्टर झटका और चेलाराम तथा मास्टर घसीटाराम असिस्टेण्ट चीफ की बातें गम्भीरता से सुनने लगे।

"हमारे शहर में इन दिनों नशीले पदार्थों की तस्करी जोरों पर हो रही है। युवा पीढ़ी को इसकी लत डालने के लिए भी कुछ गिरोह सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं। पुलिस और खुफिया विभाग ने अनेक बार अनेक ठिकानों पर छापे मारे, लेकिन हासिल कुछ भी नहीं हुआ। लेकिन अब लगता है यह गिरोह हमारे कब्जे में आकर रहेगा।"

इसके बाद धीरे-धीरे उन्होंने ढेर सारी बातें समझाईं।

शाम कब की डूब चुकी थी। असिस्टेण्ट चीफ से बातें करने के बाद जब वह लोग उठे तो उन्होंने पांचों को एक-एक रिस्टवॉच भेंट की।

वह रिस्ट वॉच वास्तव में साधारण नहीं थी। वैसे देखने में वह आम घड़ियों की सी थी। उनके विषय में वह सभी को पहले ही समझा चुके थे।

वह जिस समय बाहर निकले टैक्सी तैयार खड़ी थी। वही टैक्सी चालक एक ओर को खड़ा था जिसका नाम कुलकर्णी था।

इनके बैठते ही उसने टैक्सी का एंजिन स्टार्ट किया और फिर टैक्सी पूरी रफ्तार पर छोड़ दी।

▭ ▭

टैक्सी होटल नीलकमल के आगे रुकी। मोटू ने बाकायदे मनीबैग खोला। दस का नोट टैक्सी चालक को दिया। उसने दो रुपये वापस किए तो मोटू ने कहा, "कोई बात नहीं रख लो...।"

कुलकर्णी ने बाकायदे सलाम की।

पांचों होटल के गेट से दाखिल हुए। हाल में पहुँचे। हाल में भीड़-भाड़ थी। वह पीछे की ओर एक मेज घेर कर बैठ गए। एक बार फिर खाना मंगवाया गया।

सभी ने दिल खोलकर खाया। जिस समय खाने से फारिग हुए। नौ बजने में बीस मिनिट शेष थे। पांचों होटल से बाहर आए तो वही टैक्सी वाला सड़क के दूसरे किनारे पर खड़ा था। ऊंची आवाज में बोला, "साब टैक्सी चाहिए?"

मोटू—इस सपय टीम का कमांडर था। उसने इशारे से बुला लिया। टैक्सी साइड में आकर खड़ी हो गई। सभी सवार हुए। एक बार फिर टैक्सी भाग खड़ी हुई।

करीब दस मिनिट के भीतर ही ये लोग उस मोड़ पर टैक्सी से उतरे जिस जगह कल रात मिस बबाल छोड़ गई थी। टैक्सी इन्हें छोड़ कर वापस हो गई।

यहां से शहर शुरू होता था। एक ओर को शहर की

झिलमिलाती रोशनियां दिखाई देती थीं—तो दूसरी ओर मरियल रोशनी वाला रास्ता था जो दूर वीरानों की ओर जाता था।

पांचों कुछ देर टैक्सी की ओर देखते रहे। वह कुछ ही देर में नजरों से ओझल हो गई।

डाक्टर झटका ने कुछ कहना चाहा तो जासूस मोटू दी ग्रेट ने दबी जुबान में कहा, "अक्ल से पैदल मत बनो —हो सकता है—गिरोह का कोई आदमी हम पर नजर रखने के लिए यहां तैनात हो।"

सभी मोटू की बात पर सतर्क हो गए। और फिर सारे के सारे सड़क से हटकर पेड़ों की झुरमुट में समा गए।

निश्चित समय पर कार की रोशनी दिखाई दी। पांचों पांडवों की आंखें चमक उठीं। कार निश्चित स्थान पर आकर घूमी और जिस ओर से आई थी उसी ओर को मुंह करके खड़ी हो गई।

क्या पता था पांचों पांडवों को—मिस बवाल को एक-एक बात की खबर है। कार जैसे ही घूम कर खड़ी हुई वैसे ही पांचों पेड़ों के नीचे से निकले और कार की तरफ झपटते हुए पहुंचे।

उनके करीब पहुंचते ही—मिस बवाल ने दरवाजा खोल दिया। इनके बैठते ही कार भाग खड़ी हुई।

इस बार सभी के मन में आशंकाएं अवश्य थीं लेकिन परेशानी वाली बात पहले जैसी नहीं थी। इस बार सभी ने इस बात का पूरा ध्यान रखा था कि मिस बवाल की

कार कहां-कहां से जाती है।

कुछ ही देर बाद कार उसी खण्डहरनुमां हवेली के सामने जा खड़ी हुई। सभी उतरे। और मिस बबाल के साथ खण्डहर के अन्धकार में डूब गए।

कुछ ही क्षणों में—सभी उसी कमरे में जा पहुंचे जिस जगह पहले भी इन्हें ले जाकर खड़ा किया था और तेज रोशनी ने इन्हें अन्धा बना दिया था। लेकिन इस समय वहां—धूमिल-धूमिल-सा प्रकाश फैला था। और वह आदमी जिसने इन्हें घूरा था और बात की थी। वही इस समय चमड़े की रिवाल्विंग चेयर पर विराजमान था।

"तुम में से मोटू कौन है?"

"मैं हूं बॉस…।" मोटू दबी जुबान बोला।

"तुमने फॉरेस्ट होटल में हाथापाई की?"

"यस बॉस… वह आदमी जरूरत से ज्यादा होशियारी दिखा रहा था। उसका बात-चीत का तरीका बेहद अपमानजनक था। बर्दाश्त नहीं कर सका—बस इसी खातिर मुझे फिर बॉस एक बात और भी थी—वह कहने लगा, 'अब भविष्य में तुम कभी भी यहां नहीं आओगे?' मैंने कहा, यदि भेजा गया तो अवश्य आऊंगा। बस वह उखड़ गया। उखड़ा तो फिर मैंने उसे जमने नहीं दिया। इस गुस्ताखी के लिए—मैं आपसे क्षमा मांगता हूं बॉस…।"

"क्षमा मांगने की आवश्यकता नहीं है। मैं जानता हूं—वह बेहूदा किस्म का आदमी है। पहले भी उसनें मेरे

कई आदमियों के साथ अपमानजनक व्यवहार किया है। खैर तुमने उसे पाठ पढ़ा दिया—अच्छा किया। वैसे यह सच है—मुझे ऐसी आशा थी नहीं।"

मोटू सिर झुकाए खड़ा रहा।

"खैर! अपनी प्राइवेट जासूसी संस्था का जोरदार प्रचार करो। इसकी तह में काम भी करो। तमाम अच्छे लोग ऐसा ही करते हैं। इससे पुलिस को जल्दी ही शक नहीं पड़ता। और जब तक शक पड़ने का नम्बर आता है हम कोई नया हथकण्डा अख्तयार कर लेते हैं।"

सभी चुप रहे। वही आगे बोला, "तुम अपने साथियों को इसी काम पर लगाए रखो। लेकिन तुम्हें एक महत्व-पूर्ण काम सौंपने का मैंने इरादा बनाया है।"

"जी…।"

शहर के बाहर—करीब बीस कि० मी० दूर हर इतवार को रात को एक हैलीकाप्टर आता है। वह विशेष हैलीकाप्टर है। उसके आने की खबर किसी को भी नहीं होती क्योंकि उसमें साईलेन्सर फिट होता है। इतना ही नहीं—उसमें ऐसे यन्त्र भी फिट होते हैं कि उसे शक्तिशाली राडार भी पकड़ नहीं पाते। वहां से हर सप्ताह तुम्हें एक पैकेट लाना है। काफी नीचे आकर एक छोटे से पैरासूट से उसे वह छोड़ जाते हैं।"

"यस बॉस…।"

"तुमने यदि यह काम सम्हाल लिया तो हर ट्रिप पर पांच हजार मिलेंगे। अर्थात् महीने के बीस हजार कमा-ओगे।"

"जो आज्ञा बॉस···।"

"यह सब तो ठीक है लेकिन एक बात याद रखना— यदि तुमने या तुम्हारे किसी साथी ने गद्दारी की तो तुरन्त ही गोली मार दी जाएगी। हमारे गिरोह में गद्दारी की सजा मौत है।"

पतलू और घसीटाराम की सांसें ऊपर नीचे होने लगीं। चेलाराम की बोदी अंगड़ाईयां लेने लगीं। बॉस कहीं उसकी बोदी को देखकर किसी तरह का पता न चला ले उसने अपनी बोदी को पकड़ लिया और कान तक खींच लिया।

डॉक्टर झटका की पिंडलियां कांपने लगीं। वह सोचने लगा, "यदि कहीं इसे पता लग जाए कि हम केन्द्रीय खुफिया विभाग के असिस्टेण्ट चीफ से मिले हुए हैं तो ये हमें तुरन्त ही गोली मार देगा।"

इस विचार के साथ ही डाक्टर झटका की ठोड़ी कांपने लगी। सँन किया—फुग्गा फाड़ रो पड़ी।

"तुम लोग क्या सोच रहे हो?" बॉस ने अपनी नजरें उन चारों की ओर घुमाईं।

इतना पूछते ही डाक्टर झटका चीख पड़ा, "भा···ई···।"

मोटू चूंकि डाक्टर झटका की दिलेरी से परिचित था। उसने तुरन्त ही मामले को लीपने-पोतने की शुरू-आत की। वह हँसते हुए बोला, "डाक्टर साहब···इसमें भाई की जरूरत क्या है? बॉस जो कहते हैं करते हैं। यदि ऐसा न होता तो क्या बॉस हमें एडवांस रकम देते?

मैं जानता हूं—तुम हमेशा इस सिद्धान्त के हामी रहे हो कि पहले पैसा बाद में काम—यह बात यहां भी लागू होगी।"

बॉस की आंखों में क्रोध के लाल डोरे तैर गए। उसने कहा, "तुम लोग गजब के लालची आदमी हो।"

"सौरी बॉस···इस दुनिया में पैसा ही खुदा है। हम खुदा को किसी भी कीमत पर छोड़ना नहीं चाहते।"

"पैसा तो मैं तुम लोगों को इतना दूंगा कि तुम लोग भी क्या याद रखोगे ?"

"तब बॉस हम चलते हैं।" मोटू ने इजाजत मांगी।

"कल ठीक आठ बजे तुम यहां आ जाओगे। अकेले आओगे। अपने साथ भविष्य में कभी इन अपने चमचों को नहीं लाओगे। मुझे जब भी जहां के लिए जो काम होगा—वहां के लिए तुम्हें किसी न किसी रूप में आदेश दे दिया जाया करेगा।"

"जो आज्ञा बॉस···।" मोटू ने बाकायदे बॉस के सम्मान में सिर झुकाया।

मिस बबाल तैयार खड़ी थी। उसने किसी तरह का भी हस्तक्षेप इनकी बातों के बीच नहीं किया था।

ये सारे के सारे सीढ़ियों की ओर रवाना हुए। उधर बॉस के नजदीक मिस बबाल पहुंची, "बॉस, मुझे मोड़ पर तैनात एजेण्ट ने खबर दी थी कि ये लोग किसी टैक्सी से आए थे। उस समय तक उसे घूर कर देखते रहे—जब तक कि वह नजरों से ओझल न हो गई। इसके बाद ये पांचों पेड़ों की छांव में चले गए थे। वहां छुपकर

खड़े हो गए थे ताकि कोई ऐसा वैसा आदमी इन्हें देख न सके।"

खबर देने के बाद बबाल सीढ़ियों की ओर तेज कदमों से चल दी।

उधर पांचों बाहर निकले।

"डाक्टर झटका, हर जगह मेरे यार पैसों के लिए नहीं रोया करते। बॉस एक नेक इंसान है। हम यदि ईमानदारी और वफादारी के साथ काम करेंगे तो क्या मजाल है कि बॉस कभी हमारी ओर टेढ़ी नज़र से देखे भी। दूसरी बात—बॉस से पैसा मिलने में हमें कभी कोताई नहीं होगी।"

"दोस्त मोटू, अब तुम तो बॉस का स्पेशल काम करोगे और हम करेंगे वही काम जो हमने किया है।" पतलू बोला।

"मेरे यारो तो इसमें बुराई क्या है? जो भी हमारी इन्कम होगी—हम उसे हर माह बराबर हिस्सों में बांट लिया करेंगे।"

"सही कहते तो यार मोटू—लेकिन मैं बँटवारा तुरन्त चाहता हूं। महीनों का इन्तजार करना मेरे लिए कठिन है।" चेलाराम बोला।

"जानता हूं वरना तुम्हारी बोदी उस समय तक अंगड़ाई लेती रहेगी जब तक कि बँटवारा हो नहीं जाता।"

अभी बात-चीत चल ही रही थी कि पीछे से मिस बबाल आ गई। इन लोगों को इस बात की खबर नहीं

थी—वहां हर मोड़ पर और हर ओट में—एक न एक गिरोह का आदमी छुपा खड़ा है और उनकी बातें सुन रहा है।

वैसे इन सभी ने यह पाठ पहले ही पढ़ लिया था, "हम कहीं भी बात करें कैसी भी बात करें, गिरोह के पक्ष में बातें करेंगे।" इस बात का इन्होंने बाकायदे ध्यान रखा था।

मिस बबाल ने उन्हें एक बार फिर कार में बिठाला और एंजिन स्टार्ट करके चल दी। काफी देर तक उसने रोशनी नहीं जलाई।

उधर कुछ लोगों ने बॉस को खबर दी, "बॉस, हमने इनकी बातें सुनीं। ये लोग बड़े लालची हैं।" उसने पूरी बातें ज्यों की त्यों सुना दीं।

"जानता हूं···लेकिन हमारे लिए यह बात शुभ है। ये लालची हैं—तभी तो हमारे काम आ सके वरना ये हमारे हाथ आते ही क्यों?"

उधर मिस बबाल ने इन सभी को मोड़ पर उतार दिया। वह वापस हो गई। पांचों कार से उतरते ही बीच रास्ते पर चलने लगे।

▭ ▭
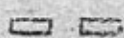
केन्द्रीय खुफिया का असिस्टेण्ट चीफ—इस समय अपने आफिस में ही बैठा था। उसके सामने मेज पर एक टी० वी० सैट रखा था। उस पर बाकायदे पांचों दिखाई दे रहे थे।

"यार मेरी तो जान निकली जा रही है !" डाक्टर झटका बोला, "यदि उस बॉस के बच्चे को पता चल गया तब क्या होगा ?"

"डाक्टर झटका, वैसे तो तुम बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे—और अब गीदड़ों को भी मात कर रहे हो ? मुझे तो आश्चर्य है तुम्हें किसने डायमण्ड सीक्रेट हाउस में घुसने दिया।"

"मोटू···!" डाक्टर झटका ऐंठकर बीच सड़क पर खड़ा हो गया, "तुमने मेरे दिल पर करारी चोट की है—मैं तुम्हें बता दूं—डाक्टर झटका आम आदमी नहीं है। वह खास आदमी है। उसके पैंतरे और तेवर साधारण नहीं हैं। अनेक बार डाक्टर झटका को ००७ जेम्स बॉस का निमन्त्रण भी मिल चुका है। अनेक मामलों में मैंने उसे एडवाइज़ दी है—क्या दी है—एडवाइज़—मतलब सलाह।"

"यार झटका···!" मोटू ने कुछ कहना चाहा।

"तुम सब अभी डाक्टर झटका को जानते हो न पहचानते हो।"

"तब जनाब भाई···भाई क्यों करने लगे थे ?" मास्टर घसीटाराम ताव खा गया।

"वह तो दुश्मन को अपनी कलाकारी दिखा रहा था।"

इस बात पर सभी हँसने लगे। असिस्टेण्ट चीफ भी हँसने लगा। उसने टी० वी० का स्विच दबा दिया। इधर टी० वी० आफ किया उधर उसने इण्टर कॉम का

बटन दबा दिया।

कुछ ही पलों में एक आदमी ने प्रवेश करते हुए कहा, "जी···सर···!"

अस्सिटेण्ट चीफ ने अपनी पीठ को आरामदेह कुर्सी की पुश्त से टिका दिया और अपनी चिकनी खोपड़ी पर हाथ फिराते हुए कोड में कुछ कहने लगा।

जवाब में उसने भी कोड भाषा का इस्तेमाल किया। कुछ देर तक वह आपस में बातें करते रहे। उपरांत वह फुर्ती से बाहर निकल गया।

"एक जमाने के बाद इस गिरोह के ठिकाने का पता चला है। इसे मैं इस तरह घेर कर मारूंगा कि ये भी क्या याद रखेगा?"

उधर मोटू-पतलू सीधे आफिस पहुंचे। दरवाजा बंद करके ये अन्दर के सुरक्षित कमरे में पहुंचे। सभी एक दूसरे के सामने बैठ गए। मोटू ने बात-चीत का सिलसिला शुरू किया।

"हम सोचते थे—हम जनता के छोटे-छोटे जासूसी मामले लिया करेंगे लेकिन यहां तो पहले ही दिन से बहुत बड़े-बड़े मामले आ गए।"

"क्यों नहीं, सरकारी भी और प्राइवेट भी।" पतलू चहकते अन्दाज में बोला।

"दोस्तो, मैं तो एक ही बात जानता हूं दुधारू गाय को ही मालिक हरी-हरी घास खिलाता है। असिस्टेण्ट चीफ महोदय ने हम पांच आदमियों को दस हजार दिए हैं। इसका मतलब है चीफ ने हमें ये टुकड़ा वैसे ही नहीं

दे दिया है। मामला गहरा है। हमें काफ़ी सोच समझ-कर आगे बढ़ना चाहिए। वरना सम्भव है—हमें गोलियां नसीब हों।" चेलाराम अपनी बोदी के साथ खिलवाड़ करते हुए बोला।

"मिस्टर चेलाराम...इतना तो हमारी खोपड़ी में भी है कि मामला गहरा फँसा है। वरना वह बॉस का बच्चा क्या हमें हरे-हरे नोट इस तरह देता? और फिर चीफ साहब ने हमें सभी कुछ तो बता दिया है।" मोटू बोला।

"इसका मतलब है मिस्टर चेलाराम...?" मास्टर घसीटा ने मोटू के स्वर से स्वर मिलाया, "तुम जो कुछ भी कह रहे हो—बकवास छांट रहे हो। रात काफी बीत गई है। मेरी कमर का कचूमर निकल गया है। मैं अब आराम करना चाहता हूं। और यदि कोई मतलब की बात करनी है तो करो वरना—मुझे आराम करने दो।"

"तुमसे अनेक बार कहा है मास्टर घसीटाराम—तुम मुझसे अपनी कमर का इलाज करवालो—कुछ ऐसी तरकीबें बता दूंगा कि तुम्हारी कमर काफी मजबूत हो जाएगी। साथ ही कुछ ऐसे तेल भी बता दूंगा जिनकी मालिश करोगे तो वह इतनी मजबूत हो जाएगी कि तुम यदि किसी दिन रेल के नीचे लेट भी जाओ तो कमर का बाल भी बांका न हो।"

"डाक्टर तुम्हारा दिमाग फिर चल गया लगता है। मैं...पूछता हूं...मैं ट्रेन के नीचे जाकर लेटूंगा ही क्यों?"

डाक्टर झटका हँसने लगा। हँसते हुए ही बोला,

"अरे भाई मास्टर, तुम ठहरे इज्जतदार-शर्मदार सम्भव है किसी दिन तुम्हें इस बात का एहसास हो कि तुमने आज तक सिवाए सत्तरह किस्म के पापड़ बेलने के और कुछ किया ही नहीं—तो तुम ऐसे समय अपने जीवन को और बरबाद नहीं करना चाहोगे। उसे बचाना चाहोगे। अपना जीवन बचाने का तुम्हारे पास तब एक ही रास्ता तुम्हें नजर आएगा और वह होगा—ट्रेन के नीचे जाकर लेट जाने का।"

"मैं तुम्हारी तरह कायर नहीं हूं—समझे डाक्टर।"

"गलत समझ रहे हो यार—मैं तो एक बात कह रहा हूं। लेकिन मैं तुम्हारा शुभचिंतक हूं, इसीलिए तुम्हारी कसर का इलाज करने का विचार कर रहा हूं।"

इस बात पर सभी कहकहा लगा कर हँसने लगे।

घसीटाराम ने घूरकर सभी की ओर देखा और वह दूसरे कमरे में चला गया। उसके जाने के बाद कुछ देर तो वह हँसते रहे—फिर वह गम्भीर हो गए और धीरे-धीरे बातें करने लगे।

▭ ▭
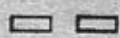
पांचों पांडवों को पता नहीं था—उनकी सारी गतिविधियां असिस्टेण्ट चीफ न सिर्फ सुन सकता है बल्कि देख भी सकता है। उसने इनकी बातें तो सुनी ही थीं—साथ ही मिस बबाल के साथ-साथ वह खुफिया अड्डा व बॉस को भी देख लिया था—जिसके साथ इन पांचों ने बात-चीत की थी।

जिस समय ये पांचों टैक्सी से सड़क के उस मोड़ पर उतरे थे जहां से एक रास्ता वीराने में जाता था तो वहां कुछ लोग पेड़ों पर छुपे बैठे थे—जिन्हें ये पांचों देख नहीं सके थे। लेकिन असिस्टेण्ट चीफ देख चुके थे। उन्हें इस बात से—यह अन्दाज़ा लगाना आसान हो गया था कि उस मोड़ से अपराधियों ने नाकेबन्दी कर रखी है—ताकि कभी किसी तरह की पुलिस द्वारा कोशिश की जाए तो वह अपने खुफिया अड्डे को खबर कर सकें।

इस रास्ते पर वैसे भी आमदरफ्त (यातायात) कम थी। कभी-कभार ही कोई कार या ट्रक आता-जाता हो।

जब से उन्होंने हैलीकाप्टर की बात सुनी थी—वह ताने-बाने बुनने लगे थे। उन्होंने अपने सहायकों से विभागीय स्तर पर विचार करना शुरू कर दिया था।

उन्हें इस बात का पूरा विश्वास था कि इस बार शहर के इस कोढ़ को वह अवश्य ही मिटा सकेंगे।

अपराधी काफी चालाक था—वह हमेशा हीं पुलिस को धता बता जाता था। इसकी वजह एक ही थी—उसके रूप अनेक थे। काम करने का ढंग निराला था। वह हमेशा ही नए-नए शिकार फांसता था। उनसे काम लेता था और फिर उनकी छुट्टी कर देता था।

क्या पता था इस बार उसे वह किन लोगों को फांस बैठा है। जो डायमण्ड सीक्रेट हाउस के एजेण्ट हैं जो हमेशा ही नए-नए कारनामों को बचकाना हरकतों के माध्यम से अंजाम देते हैं।

अब यह एक दूसरी बात थी कि इन पांचों पांडवों ने कुछ पैसा कमाने के लिए प्राइवेट जासूसी संस्था खोली और कोई बहुत बड़ा मगरमच्छ फंस गया।

सारी रात पांचों पांडव तू-तू मैं-मैं करते रहे। किसी तरह सुबह हुई तो सभी सतर्क हो गए। सुबह-सुबह नाश्ते के लिए एक होटल में गए। वहां जिस मेज पर बैठे और नाश्ता मंगवाया वेटर ने बड़ी ही सफाई के साथ एक चिट भी डाल दी। चिट मोटू नें सम्हाली। जिस सफाई से चिट डाली गई थी उसी सफाई से मोटू ने उसे पढ़ा। लिखा था—

सावधान! दो आदमी जो खुफिया विभाग के लगते हैं, तुम्हारा पीछा कर रहे हैं।

मोटू ने चिट सम्हालकर जेब्र के हवाले कर ली। उसके भीतर तक कोई चीज कौंच गई।

"दुश्मन की नज़रें हम पर लगी हैं—हम जरा भी चूके और उसकी गोली का निशाना बने।" मोटू ने सोचते हुए अपने चारों तरफ देखा, "वह कौन हैं जो हम पर नज़र रख रहे हैं?" साथ ही वह यह भी जानना चाहता था कि वह कौन है जिसने आगाह किया—"खबरदार किया!" लेकिन मोटू चाह कर भी उनको पहचान नहीं सका।

जाहिर था—ये पांचों पांडव इस समय दो पाटों के बीच फंसे हुए थे। इनकी जरा सी असावधानी इन्हें गोली का शिकार बना सकती थी।

नाश्ता करके ये होटल से निकले। गेट से बाहर आते

ही—जो टैक्सी सामने आई—उसके चालक को मोटू ने पहचान लिया और उसने तुरन्त ही टैक्सी के लिए इंकार कर दिया।

ये पैदल ही चलने लगे। कुलकर्णी को समझते देर न लगी, "यहां अवश्य ही कोई है जिसकी नज़रों में वह मुझे नहीं लाना चाहता।" वह तुरन्त ही दूसरी सवारी की तलाश में आगे बढ़ गया।

काफी आगे आकर इन्होंने एक सरदार टैक्सी वाले को बुलाया। जैसे वह बैठे टैक्सी चल दी। टैक्सी चालक सरदार ने बिना पीछे मुड़े कहा, "पिछली सीट पर चमड़े के छोटे से बैग में एक विशेष प्रकार का यन्त्र है—उसे निकाल लो और अपने पास छुपा लो—जरूरी है। शेष बातें असिस्टेण्ट चीफ खुद करेंगे।"

'बाप रे!' मोटू और साथी चौंके, "इसका मतलब है, असिस्टेण्ट चीफ ने भी अपना जाल पूरी मजबूती से फैला रखा है।"

मोटू ने बैग खोला और उसमें से किसी धातु की छः इंच चौड़ी और उतनी ही लम्बी प्लेट निकाली। उसने तुरन्त ही उसे जेब के हवाले कर लिया।

टैक्सी आफिस के सामने रुकी। सभी उतरे। मोटू ने बिल अदा किया।

जैसे ही ये आफिस रूम में पहुंचे फोन की घंटी बजती मिली। मोटू ने जैसे ही फोन उठाया, दूसरी ओर से आवाज़ गूंजी, "मिस्टर मोटू…।"

"यस स्पीकिंग…।"

"तुम्हारे पीछे अभी से दो आदमी लग गए हैं—सावधान रहने की जरूरत है।"

"चिन्ता न करें बॉस···।"

"ठीक है, रात दस बजे तक उसी मोड़ पर पहुंच जाना। आज तुम्हें ही माला लाना है।"

"आप चिन्ता न करें बॉस···और कोई सेवा···।"

"एक बूढ़ा आदमी आएगा — उसका आदेश मानना।"

"उसकी पहचान बॉस···।"

"उसकी गर्दन जरूरत से ज्यादा लम्बी है।"

इसके बाद ही फोन कट हो गया।

सभी लोग एक बार फिर समस्या पर गम्भीरता से विचार करने लगे। लेकिन तभी जब बातें हो रही थीं मिस्टर मोटू की रिस्टवॉच से अजीब-सी सांकेतिक ध्वनि निकलने लगी।

उसने तुरन्त ही घड़ी के कांटे घुमाए और जैसे ही घड़ी में बारह बजे घड़ी से असिस्टेण्ड चीफ आफ स्टाफ की आवाज़ गूंजने लगी, "मिस्टर मोटू—जो प्लेट तुम्हें भेजी गई है उसके एक तरफ करीब बीस स्विच लगे हुए हैं···।"

इसके बाद ही वह उन स्विचों को दबाने पर नतीजों के विषय में समझाने लगे। ज्यों-ज्यों पांचों पांडव सुनते गए त्यों-त्यों उनके चेहरों की रंगत खिलती गई। कुछ ही देर में उनके चेहरे आश्चर्य मिश्रित खुशी से चमकने लगे।

दोपहर के समय दरवाजे पर दस्तक पड़ी तो मास्टर घसीटाराम ने दरवाजा खोला। लम्बी गर्दन वाला एक बूढ़ा व्यक्ति देखते ही बोला, "इस आफिस के साब से मिलना है।"

घसीटाराम ने उसे भीतर बुला लिया। उसने अपने चारों तरफ देखा और फिर जेब से उसने आठ पैकेट निकाले। ये पैकेट भी कल के पैकेटों की तरह ही थे। उन पर ऐड्रेस पड़े थे।

"इन्हें आप लोग ठिकानों पर पहुँचा दें।" वह इसके बाद ही चला गया।

उसके जाने के बाद मोटू ने अपने साथियों को दो-दो पैकेट दिए। इसका मतलब वह समझ ही गए थे। वह बिना देर किए—एक-एक करके बाहर निकल गए।

मोटू को पूरा विश्वास था—कोई न कोई हम पर अवश्य ही नज़र लगाए होगा।

अपने आदमियों के निकलते ही उसने एक बार फिर खिड़की की राह बाहर का दृश्य देखा। वही दो आदमी—जो कल खड़े थे—वही इस समय भी बतयाते खड़े थे, जैसे वह बस की प्रतीक्षा में खड़े हों। उसने खिड़की बन्द कर दी।

धीरे-धीरे शाम हुई। कुछ समय बाद—पतलू, चेलाराम और मास्टर घसीटा के साथ-साथ डाक्टर झटका भी आया। उसने खबर दी—हमने वह पैकेट

ठिकानों पर पहुंचा दिए हैं।

वह सारे पैकेट शहर के होटलों में गए थे। ऐसे होटलों में जिन्हें अच्छा नहीं समझा जाता था।

शाम डूबने के बाद पांचों पांडव निकले। उन्होंने अपनी चाल-ढाल से और व्यवहार से यह जाहिर की—कि वह लोग पूरी तैयारी के साथ निकले हैं।

टैक्सी से सबसे पहले वह होटल नील कमल पहुंचे। सभी ने खाना खाया। काफी समय वहां बिताया। फिर कुछ समय तक वह घूमते रहे। समय होते ही मोटू गायब हो गया।

ठीक दस बजे मोटू ने उसी मोड़ पर टैक्सी छोड़ी जिस मोड़ पर पहुंचने का आदेश बॉस ने उसे दिया था।

वह टैक्सी के घूमते ही—कुछ देर उसे देखता रहा फिर पेड़ों की ओट में जाकर छुप गया। हमेशा की तरह कुछ ही देर बाद कार आती दीखी। मोड़ के पास तक आकर वह घूम गई। मोटू लम्बे कदमों से करीब पहुंचा। और उसके बैठते ही भाग खड़ी हुई।

लेकिन आज कार उस ओर को नहीं गई जिस ओर खण्डहर था। कार की कुछ आगे जाकर रफ्तार और भी तेज हो गई। मोटू को लगा—कार भाग नहीं रही है—उड़ रही है। जिस ढंग से मिस बबाल कार को भगा रही थी—लगता था बस अब या तब किसी पेड़ या सड़क की पुलिया से टकरा ही जाएगी—लेकिन

ऐसा नहीं हुआ। कार रुकी। मोटू ने माथे का पसीना पोंछा।

कार से बाहर निकलते ही मोटू का कलेजा हलक में आ लगा। करीब दस लोगों ने उन्हें तुरन्त ही घेर लिया। सभी के हाथों में खतरनाक गनें थीं। वह लोग भी ऊंचे-पूरे, बलिष्ठ और खूंख्वार नजर आ रहे थे। मिस बबाल ने उनसे आदेशात्मक लहजे में कहा, "हमारा विशेष आदमी है—सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा जाए।"

वह उपरान्त कार में बैठी और पूरी रफ्तार पर उसने कार वापस की।

मोटू उनके साथ एक ओर को चल दिया।

"वह मैदान आप देखते हैं?" एक निश्चित स्थान पर पहुंच कर उस दल के कमांडर ने कहा, "हैलीकाप्टर वहीं आएगा।"

सभी लोग इधर-उधर फैल गए। सभी ने हरी रंग की ढीली-ढाली वर्दी पहन रखी थी। चेहरों को स्कॉर्फ से ढंक रखा था।

भयानक खामोशी और अन्धकार— मोटू के दिल में रह-रह कर उथल-पुथल होने लगती।

"ईश्वर जाने क्या होने वाला है!" सोचते हुए उसने चारों तरफ देखा। उन लोगों का अब पता नहीं था। कोई नहीं कह सकता था—यहां कोई होगा।"

एक-एक क्षण मोटू के लिए महंगा पड़ रहा था।

किसी तरह बारह बजे। फिर एक —कुछ ही देर बाद जोर की आवाज से वहां का वातावरण गूंज उठा। मोटू सतर्क हो गया। वह मैदान की तरफ भागा। तभी हैलीकाप्टर दिखाई दिया। जैसे ही मैदान के ऊपर आया वह नीचे की ओर झुकने लगा। दूसरे ही क्षण एक पेटी पैरासूट से नीचे की ओर आती दीखी। हैलीकाप्टर उठ पाता—मोटू ने अपने सीने पर हाथ फिराया और पहला स्विच दबा दिया। हैलीकाप्टर से अजीब-अजीब-सी आवाज़ें आने लगीं। वह आखिरकार ऊपर उठ न सका। मैदान में ही उतर गया। अभी मोटू पैकेट सम्हाल पाता —गड़गड़ाहट की आवाज़ें निरन्तर तेज़ होती गईं। देखते ही देखते दसों हैलीकाप्टर वहां मँडराने लगे। उनसे लोग कूदने लगे। उनके साथ छोटे लेकिन विशेष ैरासूट थे। दसों गनधारी हैलीकाप्टरों पर फायर झोंकने लगे। लेकिन अजीब-सा करिश्मा देखने में आया—गोलियां चलतीं अवश्य लेकिन करीब ही गिर जातीं।

हैलीकाप्टर चालक ने मामला जैसे समझ लिया था। वह एक दम भागा उसके साथ दो लोग और भी थे—वह भी भागे। भागते हुए उन लोगों ने तेज़ जहर चाट [illegible]या। लड़खड़ाकर गिरे। फि[illegible]र उठ नहीं सके।

हैलीकाप्टरों से कूदे लोगों ने वहां उपस्थित लोगों को दबोच लिया। इस करतब में उन्हें अधिक देर नहीं लगी, क्योंकि वहां छुपे अपराधियों की गनों ने काम

करना बन्द कर दिया था।

इधर यह सब चल रहा था और उधर कुछ हैली-काप्टरों ने वीराने में खड़ी खण्डहरनुमां हवेली पर घिराव शुरू कर दिया था। हैलीकाप्टरों से कूदे लोग धड़धड़ाते हुए भीतर घुसे और उन्होंने वहां मौजूद करीब बारह आदमियों और दो औरतों को कब्जे में ले लिया। वहां से विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थों का जंगी स्टॉक मिला। इसके साथ ही शहर के करीब पच्चीस-तीस लोगों के पते भी मिले जो इस काम में सहयोग करते थे। कुछ तो ऐसे भी थे जो नशीले पदार्थों को दूसरे शहरों में भेजते थे।

पुलिस डी० एस० पी० ने तुरन्त ही हेडक्वार्टर को खबर दी और पुलिस दल के दस्ते उन-उन ठिकानों की ओर दौड़ पड़े—जहां इस गिरोह के लोग रहते थे। इसके साथ ही होटलों और क्लबों पर भी छापा मारा गया।

लेकिन जिस समय डी० एस० पी० महोदय ट्रांस-मीटर पर हेडक्वार्टर से सम्पर्क साधकर कार्रवाई पर बात-चीत कर रहे थे—इस गिरोह के बॉस को मौका मिल गया और वह भाग खड़ा हुआ। गोली चली और बॉस की खोपड़ी उड़ गई। उसका चेहरा अनेक गोलियों का शिकार हो गया था—यह मात्र एक संयोग था। जिस समय बॉस को पकड़ा गया—उसके चेहरे को पहचानना भी कठिन हो गया। पता ही न चल सका—वह कौन था।

दूसरे दिन अखबारों में धमाकेदार खबर छपी। सैंकड़ों लोगों को सारी रात के सफल छापों में पकड़ा गया था। इस कार्रवाई की सफलता का श्रेय डायमण्ड सीक्रेट हाउस के पांच पांडवों को दिया गया अर्थात् मोटू-पतलू, मास्टर घसीटाराम, चेलाराम और डाक्टर झटका को। सारे शहर ने इन पांचों पांडवों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

॥ समाप्त ॥

नन्हें-मुन्नों की पहली पसंद

नये डायमण्ड कामिक्स

चाचा चौधरी और पोपट लाल	४-००
ताऊ जी और जादूगर नागमणि	४-००
छोटू लम्बू और अद्‌भुत ड्रम	४-००
अंकुर और कानी जादूगरनी	४-००
पलटू और दैत्य का बदला	४-००
पिकलू और काला चीता	४-००

पूर्व प्रकाशित डायमण्ड कामिक्स

शांति की मसीहा इंदिरा गांधी	४-००
अमिताभ बच्चन फिल्मों से संसद तक	४-००
आशाओं आकांक्षाओं के प्रतीक राजीव गांधी	४-००
चाचा चौधरी और उड़ने वाली कार	५-००
चाचा चौधरी और चंपत संपत	४-००
चाचा चौधरी और साबू पर हमला	४-००
माटी मेरे देश की	४-००
नहीं बिकेगी यह धरती	४-००
मेरा वतन मेरा चमन	४-००
कैप्टन विकास और डैथ मिरर	४-००
कैप्टन विकास और अंतरिक्ष में सर्वनाश	४-००
चिम्पू और कातिलों की टोली	४-००
चिम्पू और नीली गुफा का रहस्य	४-००
मोटू छोटू और मक्कड़ दादा	४-००
मोटू छोटू और मूंछों का कमाल	४-००
जासूसी चक्रम और अनोखा ब्लैकमेलर	४-००
आलतूराम फालतूराम चले सुबह की सैर करने	४-००
राजन इकबाल और डमडम का कमाल	४-००
राजन इकबाल और बौने कातिल	४-००
पलटू और जादुई संदूक	४-००